Postal Regd. No : L/SLN/98/ 2019-21
RNI. Regd. No 66124/97
D.A.V.P No.131488

केन्द्र एवं हिमाचल सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त
हिमाचली संस्कृति एवं जनभावनाओं का सहज प्रवक्ता

हिम हिमवन्ती

नाहन (सिरमौर)
वर्ष : 23 अंक : 43
प्रत्येक बुधवार
23 से 29 अक्टूबर 2019
पृष्ठ : 8 मूल्य : तीन रुपये
हिन्दी साप्ताहिक
सम्पादक : अरविन्द गोयल

www.himwanti.in E-mail : himwantimedia@gmail.com
WhatsApp 9318855025 @himwantimedia

लाला ज्ञानचंद गोयल व परिवार ने मनाया दीवाली मिलन समारोह

पांवटा ;हिकाद्ध. पांवटा के प्रमुख व्यवसायी व समाजसेवी लाला ज्ञानचंद गोयल ने अपने परिवार के साथ दीपावली के शुभ अवसर पर दीवाली मिलन समारोह का आयोजन एक रिजोर्ट में मनाया जिसमें नाती–रिश्तेदारों के साथ–साथ शहर के प्रमुख लोगों ने शिरकत की। मुख्य द्वार पर उनके सुपुत्र अरूण गोयल पुत्रवधू कविता गोयल पौत्री प्रथा गोयल व अन्य परिजन उपस्थित थे।

लाला ज्ञानचंद जी व उनका परिवार समाज में कुछ न कुछ अनुठा करते ही रहते हैं। दिवाली पर्व को एक यादगार पर्व मनाने के उद्देश्य से पिछले वर्ष उन्होंने यह परम्परा शुरू की और दीवाली पर्व अपने ईष्ट मित्रों के साथ मनाने की शुरूआत की। इस मौके पर शहर के लगभग सभी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। सभी लोगों ने नृत्य और संगीत का खूब लुत्फ उठाया और सभी आगन्तुकों का स्वागत उनकी पुत्रवधु कविता गोयल पुत्र अरूण व पोत्री प्रथा के साथ–साथ पूरा परिवार स्वयं कर रहा था।

रूस से भी कुछ नृत्य कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए यहाँ पहुँचे और उनके नृत्य से लोगों का भरपूर मनोरजंन हुआ।

इस मौके पर लाला ज्ञानचंद जी के भतीजे अशोक गोयल, पुत्रवधु अलका, पुत्री नीना गोयल दामाद अमित गोयल, भतीजा सुरेन्द्र सहित खास रिश्तेदार मदनलाल गर्ग व पंचकुला से पधारे चेयरमैन लोक अदालत, उद्यमी नरेन्द्र पाल सिंह सहोता, नरेन्द्र पाल सिंह नारंग, गुरदीप सिंह गैरी, नवीन अग्रवाल अपने–अपने परिवारों सहित मौजूद थे। लोगों ने नृत्य और गीत संगीत के साथ–साथ सुस्वाद भोजन का भी आनन्द लिया। इस तरह के आयोजनों से शहर के सभी गणमान्य व्यक्ति एक ही मंच पर इक्ट्ठा हो जाते हैं और सामूहिक रूप से दीवाली उत्सव का आनन्द लेते हैं।

हिलव्यु के नन्हें मुन्नों ने मनाया एप्पल डे

माजरा (हिका)आजकल प्रचुर मात्रा में सेब की उपलब्धता को देखते हुए हिल व्यु पब्लिक स्कूल में एप्पल डे मनाया गया। जिसके अन्तर्गत कक्षा नर्सरी व के0जी0 के छात्र –छात्राओं द्वारा सेब के ऊपर विभिन्न प्रकार की कविताएं सुनाई गई। जिनके माध्यम से सेब के रंग , आकार , एवं गुणवत्ता का संदेश बच्चों को दिया गया। इस अवसर पर सभी बच्चे रंग–बिरंगी पोशाक पहन कर आए हुए बहुत सुन्दर व प्रसन्न दिखाई दे रहें थे। स्कूल शिक्षिका साधना , रीटा , रीना , सत्या व शबाना ने बताया कि बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप यह कार्यक्रम आयोजित करवाया गया।

ईवानी हुई 3 वर्ष की

होटल ओयसिस में धूमधाम मना जन्मदिवस

सहारनपुर (हिका). सहारनपुर उत्तर प्रदेश निवासी स्व. विजय गोयल एवं श्रीमती मीरा गोयल की सुपौत्री ईवानी का जन्म दिवस गत 12 अक्टूबर 2019 को होटल ओयसिस सहारनपुर में बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

ईवानी के पिता मि. सुमित गोयल एवं माता आकांशा सहित परिवार के अन्य सदस्यों ने आगन्तुकों का भव्य स्वागत किया। इस मौके पर भारी संख्या में नाती –रिश्तेदार नन्हीं परी को आशीर्वाद देने पहुँचे। यह समारोह काफी भव्य एवं आकर्षक था जिसमें सभी आगन्तुकों ने खूब आनन्द लिया। इस मौके पर ईवानी के ननिहाल पक्ष ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा सभी ने आकर्षक डांस कर समारोह में चार चाँद लगा दिये।

नविन्द्र व अदिति को दिया आशीर्वाद

जुब्बल हटी, शिमला (अंकुश). जुब्बल हटी शिमला में हिमाचल प्रदेश सेवारत पुलिस विभाग में डीआजी कैप्टन रामेश्वर सिंह ठाकुर आर.पीएस. के छोटे सुपुत्र निवन्द्र सिंह ठाकुर जिन्हें प्यार से वैली सम्बोधन से सम्बोधित किया जाता है का विवाह कांगड़ा निवासी बारी जसवां कोटला के शैलेन्द्र सिंह जम्वाल की सुपुत्री अदिति से हुआ।

इस मौके पर ठाकुर परिवार ने अपने निवास स्थान हरि निवास गॉव लोहाली निकट जुब्बलहटटी एयरपोट में एक भव्य धाम का आयोजन किया जिसमें हिमाचल पुलिस विभाग के सभी उच्च अधिकारियों ने शिरकत की तथा नवयुगल को आर्शीवाद दिया। आगन्तुकों का स्वागत करने के लिए स्वयं कैप्टन रामेश्वर सिंह ठाकुर उनकी पत्नी विजय ठाकुर, बड़े पुत्र स्वयायडन लीडर युजवेन्द्र सिंह ठाकुर उनकी पत्नी दिशा ठाकुर के साथ–साथ समस्त ठाकुर परिवार मौजूद था। सभी नाती रिश्तेदारों के साथ–साथ दूर–दूर से विशिष्टजनों ने भी इस नव दम्पत्ति को आशीर्वाद दिया।

नवयुगल जोड़ी को आशीर्वाद देते हुए हिमवन्ती के प्रधान सम्पादक अरविन्द गोयल, अंकुश गोयल व कांग्रेसी नेता सरदार ओंकार सिंह

समाजसेवी नितिन गर्ग ने मन्दिर को 1 हजार बर्तन देने का लिया संकल्प

पांवटा (हिका). शहर से पॉलीथिन एवं प्लास्टिक को समाप्त करने के उद्देश्य से पांवटा साहिब के एक उद्यमी हिमाचल फार्मा के स्वामी नितिन गर्ग व उनके परिवार ने स्थानीय शिव मन्दिर बद्रीनगर में स्टील के 1000 बर्तन दान स्वरूप देने का संकल्प लिया है। जिसमें प्लेटें व गिलास शामिल हैं। नितिन गर्ग ने बताया कि प्लास्टिक कचरे के खतरनाक दुष्प्रभाव से बचने के लिए प्लास्टिक और थर्मोकॉल के सामान का त्याग करना जरूरी है चूंकि इनसे जहाँ प्रदूषण फैलता है वहीं बीमारियों का भी खतरा रहता है। उन्होंने बताया कि मन्दिरों में कोई–न–कोई धार्मिक अनुष्ठान होते रहते हैं जहाँ स्टील के बर्तनों की बेहद आवश्यकता रहती है चूंकि स्टील के बर्तनों के अभाव के कारण मन्दिरों में डिस्पोजल गिलास एवं प्लेटों का इस्तेमाल किया जाता है। यदि देश से प्लास्टिक और थर्मोकॉल को खत्म करना है तो हम सभी को इस तरह के मन्दिरों में स्टील के बर्तन देने की पहल करनी होगी।

नितिन गर्ग ने कहा कि वह इस कार्य के लिए कोई प्रसिद्धि नहीं चाहते लेकिन लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से उन्होंने इस धार्मिक कार्य को करने की ठानी जिसके तहत उन्होंने अपनी माता जी के साथ मन्दिर परिसर में पहले पूजा अर्चना की और फिर 100 बर्तनों का सैट मन्दिर को भेंट किया। इनका परिवार धार्मिक परिवार रहा है तथा पिता जी भी शिव भक्त रहे हैं।

टैक्नोमैक कंपनी के मुख्य प्रबंधक के खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी

शिमला (ब्यूरो). टेक्नोमैक के प्रबंध निदेशक राकेश कुमार शर्मा के खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया गया है। इसी के बाद जांच अधिकारियों ने नाहन कोर्ट से आरोपी के खिलाफ गिरफ्तारी वॉरंट हासिल किया और फिर इंटरपोल से संपर्क साधा है। टैक्नोमैक घोटाले का मुख्य सरगना लंबे समय से सीआईडी की पकड़ में नहीं से परे है। बिजली बिल के आरटीजीएस में सात करोड़ के घोटाले और 2100 करोड़ के वैट गबन के मुख्य आरोपी और टेक्नोमैक के प्रबंध निदेशक राकेश कुमार शर्मा के खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस (आरसीएन) जारी किया गया है। सीआईडी को यह भी जानकारी मिली है कि राकेश विदेश भाग चुका है। इसी के बाद जांच अधिकारियों ने नाहन कोर्ट से आरोपी के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट हासिल किया और फिर इंटरपोल से संपर्क साधा है। अब रेड कॉर्नर नोटिस के बाद दुनियाभर की पुलिस एजेंसियां राकेश की तलाश करेंगी।

गौरतलब है कि नाहन स्थित इंडियन टेक्नोमैक कंपनी के खिलाफ 2016 में सीआईडी ने दो मामले दर्ज कर 4300 करोड़ से ज्यादा के घोटाले का खुलासा किया था। मामले में अगली चार्जशीट इसी महीने के अंत तक दाखिल हो सकती है। इस मामले में अब तक कुल 22 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। इनमें कंपनी के दो निदेषकों के अलावा दो ऑडिटर, दो संपत्ति खरीदार, आबकारी एवं कराधान विभाग के 9 कर्मचारी शामिल हैं।9 आरोपियों के खिलाफ फाइनल रिपोर्ट कोर्ट में पेश की जा चुकी है. इसके अलावा राकेश शर्मा का दिल्ली से बना पासपोर्ट निरस्त करा दिया गया है।

स्वास्थ्य चर्चा

बड़े काम के हैं प्याज और लहसुन के छिलके

बड़े काम के हैं प्याज और लहसुन के छिलके, ना करें फेंकने की गलती अमूमन लोग सब्जियों के छिलके उतार कर फेंक देते हैं जो कि गलत है। बता दें कि सब्जियों के छिलकों में प्रमुख पोषक तत्व जैसे कि विटामिन ए, सी, ई और एंटीऑक्सीडेंट्स, फ्लेवेनोइड्स आदि होते हैं। अब से अगली बार सब्जियों के छिलकों को फेंकने की गलती ना करें बल्कि उनका इस्तेमाल करने का तरीका जान लें। प्याज और लहसुन के छिलकों को इस्तेमाल करने के तरीके लहसुन और प्याज के छिलके में फेनाइलप्रोपानोइड एंटीऑक्सीडेंट होते हैं। ये एंटीऑक्सीडेंट संपूर्ण सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। ये एजिंग की प्रक्रिया को धीमा, कोलेस्ट्रॉल को कम, इम्युनिटी को बढ़ाते और कार्डियोवस्कुलर स्वास्थ्य में सुधार लाते हैं। आप प्याज और लहसुन के छिलकों को फेंकने की बजाय निम्न तरीकों से उनका इस्तेमाल कर सकते हैं।

(1) चावल बनाएं

चावल में प्याज और लहसुन का छिलका उतारे बिना इस्तेमाल करें। इससे चावल में पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ जाती है क्योंकि इन छिलकों में समान मात्रा में विटामिंस और पोषक तत्व होते हैं। अगर आप इन छिलकों को खाना नहीं चाहते हैं तो पकाने के बाद और खाने से पहले इन्हें निकाल दें। इससे चावल का फ्लेवर बढ़ जाएगा।

(2) सूप में डालें

सूप में डालें इन छिलकों को आप सूप या मांस के रस में डाल सकते हैं। सूप में प्याज और लहसुन के छिलके पकाते समय डालें और फिर छानकर सूप पी लें। इस तरह छिलकों के पोषक तत्व बेकार नहीं होते हैं।

(3) फ्लेवर की

तरह करें इस्तेमाल फ्लेवर की तरह करें इस्तेमाल लहसुन और प्याज के छिलके को भूनकर ग्राइंड कर लें। इस पाउडर का इस्तेमाल खाने का जायका बढ़ाने के लिए कर सकते हैं। इससे खाने में हल्का सा फ्लेवर आ जाता है। मांसपेशियों में ऐंठन मांसपेशियों में ऐंठन क्या आप जानते हैं कि प्याज का छिलका मांसपेशियों में ऐंठन से राहत दिलाने में असरकारी होता है। एक पैन में एक कप पानी और प्याज के छिलके डालें। इसे उबाल लें और फिर पानी को छानकर पी लें। इससे तुरंत मांसपेशियों में ऐंठन से राहत मिलती है। ये कोलेस्ट्रॉल कैंसर को भी रोकने में फायदेमंद साबित हो चुका है।

(4) बालों के लिए

बालों के लिए प्याज का छिलका प्राकृतिक हेयर डाई की तरह काम करता है जो ना केवल बालों को प्राकृतिक रूप से काला करते हैं बल्कि उनकी खोई चमक भी वापिस लाते हैं। प्याज के कुछ छिलके 4 से 5 कप पानी में उबालें। इस पानी से शैंपू के बाद बालों को धोएं।

(5) बेहतर नींद

के लिए बेहतर नींद के लिए प्याज के छिलकों से बनी चाय उन लोगों के लिए फायदेमंद होती है जिन्हें सोने में दिक्कत आती है। प्याज के छिलकों से बनी चाय को सोने से पहले पीएं। इससे मस्तिष्क को आराम मिलता है और नींद आने में मदद मिलती है।

दादी माँ के घरेलू नुस्खे

घर में प्रयोग आने वाली वस्तुओं से भी कुछ रोगों का निदान होता है और उससे लाभ भी प्राप्त होता है। यहाँ कुछ नुस्खों के प्रयोग का वर्णन किया जा रहा है।

पायरिया , दांत का दर्द– पायरिया, दांत दर्द, मसूढ़ों में खून आने पर एकदम बारीक सेंधा नमक में थोड़ी सी पिसी हल्दी मिलाकर इस मिश्रण को शुद्ध सरसों के तेल में पेस्ट बना लें। प्रातःकाल तथा सायंकाल इस पेस्ट से मसूढ़ों और दांतों प हल्की–हल्की पांच मिनट तक मालिश करें। इससे बनने वाले लार को कुछ समय तक न थूकें न निगलें। कुछ समय पश्चात लार को थूक कर पानी से कुल्ला कर लें। दांतों और मसूढ़ों को आराम मिलेगा।

एग्जिमा– एग्जिमा में कुरंज के बीज लगभग सौ ग्राम लेकर इन्हें बकरी के कच्चे दूध में रात को भिगो दें। दूसरे दिन प्रातःकाल बीज को धो लें। फिर ताजा कच्चा बकरी का दूध लेकर उसमें यह बीज छीलकर घिस लें। घिसने पर मलहम की तरह तैयार हो जायेगा। इस मलहम को तांबे के बर्तन में रखें। इसे दोनों समय एग्जिमा वाले स्थान पर लगाएं। मलहम का रंग नीला होने पर घबराने की बात नहीं है। हाँ सूखने पर पुनः नया बना लें।

नकसीर– जो व्यक्ति नकसीर से पीड़ित हो वह एक प्याज को रात में आग पर भून लें फिर इस प्याज को रातभर छत पर खुले में छोड़ दें। प्रातःकाल शौचादि से निवृत होकर खाली पेट इस प्याज को छीलकर रख लें और एक घंटे तक कुछ और नहीं खाएं। यह क्रम 15 दिन तक करना चाहिए।

वात रोग– एक पाव पानी में एक चम्मच पिसी सौंठ डालकर खूब उबालें। जब पानी लगभग 100 ग्राम रह जाए तो एक चम्मच एरण्ड डालकर प्रातःकाल पीएं। प्रतिदिन सुबह यह प्रयोग लगभग दो–तीन महीने अवश्य करें। पेट साफ न होने पर दूध के साथ इसबगोल की भूसी लें। परेशानी होने पर बीच में बंद कर सकते हैं।

मलेरिया बुखार– तुलसी, काली मिर्च, अदरक और गुड़ का काढ़ा बनायें और इसमें नीबूं का रस मिलाकर पीने से मलेरिया बुखार में आराम मिलता है। सौंठ, तुलसी, मुलहठी, चार–पांच लौंग व मिश्री का काढ़ा प्रातःकाल तथा सायंकाल एक हफ्ते तक पीने से खांसी और बुखार में लाभ होता है।

मस्से– चेहरे पर मस्से के लिए काली मिर्च और फिटकरी बराबर –बराबर पीसकर चेहरे पर लेप करने से सीक से मस्सों पर लगाने से लाभ होता है।

मुंह के छाले– कोमल अमरूद की पत्ती चबाने से मुंह के छालों में लाभ होता है। चने के सतू को पानी में घोलकर पीने से भी लाभ मिलता है। दाद पर नीबूं का रस बीस दिन तक लगाने से दाद ठीक हो जाता है।

पैर की बिवाई– पैर की बिवाई में पानी गरम कर नमक मिलाकर पैर धोएं तथा सरसों का तेल गरम करके उसमें मोम को गरम कर मलहम बनाकर सोते समय लगाना चाहिए।

(साभार योग संदेश)

जुकाम में असरकारक काली मिर्च

मौसम बदलने के साथ ही मनुष्य के शरीर में भी परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इनमें से सबसे प्रमुख जुकाम है जिसके लक्षण सामान्यतः अधिकतर लोगों को दिखाई पड़ते हैं। अगर घरेलू उपचार के तरीके अपनाएं जाएं तो जुकाम से बचा जा सकता है।

– सूखी खांसी में काली मिर्च तथा मिश्री को मुंह में रखने से लाभ होता है।

– गले में खराश हो तो काली मिर्च चूसें।

– संतरे के रस में सेंधा नमक व काली मिर्च मिलाकर उसका नियमित सेवन करने से आखों की ज्योति बढ़ती है।

– काला नमक, काली मिर्च व जीरा पीस कर उसे गर्म कर लें। पेट में कीड़े हों तो चूसने से आराम मिलता है।

– मलेरिया होने पर काली मिर्च और कुटी का चूर्ण बना लें। उसे शहद तथा तुलसी के रस के साथ लेने से लाभ होता है।

– खाने के प्रति अरूचि हो तो काला जीरा, अनारदाने, सफेद भुना हुआ जीरा, काली मिर्च, मुनक्का, अमचूर तथा काला नमक को पीसकर चूर्ण बनाएं व इसे शहद के साथ खाएं।

– पुराने जुकाम में खट्टा दही, गुड़ व काली मिर्च का चूर्ण तीनों का मिश्रण का सेवन करने से लाभ होता है।

– बलगम होने पर 8–10 काली मिर्च पीस लें। इसमें नमक मिलाकर सुंघने से बलगम पानी होकर बह जाता है।

– अदरक का रस, काली मिर्च तथा नीबूं का रस, तीनों को मिलाकर बच्चों को चटाने से उनकी हिचकी बंद हो जाती है।

– सांस के रोगों में काली मिर्च के अर्क का सेवन लाभप्रद है।

बालों को भी खूबसूरत बनाता है गुलाबजल

और ग्लोइंग बनाने वाला गुलाबजल बालों के लिए खूब फायदेमंद होता हैं। जी हां, बालों से जुड़ी कोई भी समस्या क्यों न हो गुलाबजल हर समस्या का तोड़ हैं। गुलाब जल में मौजूद एंटीसेप्टिक गुण बालों के फंगल इंफेक्शन और ड्रेंडफ को कम कर सकता है। इसके अलावा ये बालों की ग्रोथ को बढ़ाता हैं।

दैनिचर्या होने के वजह से कई बार हम बालों की देखभाल को अनदेखा कर देते हैं, जब हमारे पास बालों में तेल लगाने का भी वक्त नहीं होता है। इससे हमारे बाल रुखे और बेजान होकर चमक खोने लगते हैं। इस स्थिति में गुलाबजल मददगार होते हैं।

रुखापन दूर करें– अपने बालों के अनुसार गुलाबजल एक कटोरी में निकालें। इसे रात को सोने से पहले बालों की जड़ों के साथ ही पूरे बालों में ऑइल की तरह लगा लें और सो जाएं। सुबह उठकर शैंपू कर लें। बाल स्मूद होंगे और चमकदार लगेंगे।

अगर आपके बालों में शैंपू करने के कुछ घंटे बाद ही चिपचिपापन आ जाता है तो आप 3 चम्मच गुलाबजल, 1 चम्मच शहद और आधा नींबू मिलाकर मिश्रण तैयार कर लें। अब इस मिश्रण को शैंपू से करीब 1 घंटा पहले बालों में लगा लें। इसे लगाकर देखिए और बदलाव खुद महसूस करिए। धूप और गर्मी के वजह से बाल बेजान हो जाते है और ऐसे में नहाने जाने से मात्र 10 मिनट पहले 3 चम्मच गुलाबजल में 1 चम्मच शहद मिलाकर पैक बना लें। इसे फिंगर टिप्स की मदद से बालों पर लगा लें। फिर 10 मिनट बाद शैंपू कर लें। हेयर डैमेज की समस्या तकरीबन आधी हो जाएगी।

गोपाष्टमी पर्व 4 नवम्बर को

श्रीमद्भागवद महापुराण ज्ञान यज्ञ 1 से 4 नवम्बर तक

पांवटा (अनुराग).

श्री दुधलेश्वर गौ सेवा संस्थान एवं आध्यात्मिक उन्नति केंद्र बहराल में गोपाष्टमी के पावन पर्व पर श्रीमद् भागवत महापुराण ज्ञान यज्ञ सप्ताह का आयोजन श्री श्री दीपक जी महाराज के सानिध्य में किया जा रहा है दिनांक 1 नवंबर से 8 नवंबर 2019 तक यह श्रीमद् भागवत महापुराण ज्ञान यज्ञ का आयोजन गौशाला में किया जाएगा कलश यात्रा 1 नवंबर को सुबह 8:00 बजे तथा गणेश पूजा प्रातः 9रू00 से 11:00 बजे प्रतिदिन की जाएगी तथा गोपाष्टमी पर्व 4 नवंबर 2019 को धूमधाम से मनाया जाएगा कथा प्रवचन दोपहर 12:00 बजे से 3:00 बजे तक प्रतिदिन किए जाएंगे तथा 8 नवंबर को 8:00 बजे तक तथा 11:00 बजे से भंडारा किया जाएगा

कविता संग्रह

बदलाव

❖ रमनजीत कौर

पचपन के दिन थे वो बहुत अच्छे
अंजान थे हम, कौन से रिश्ते हैं झूठ और सच्चे।
आज मोबाइल से सब कनेक्ट हो गये
आज अपने अपनो से ही डिस्कनेक्ट हो गये।।

कभी घर में थे मेम्बर ज्यादा और कमरे कम
आज मेम्बर कम और कमरे ज्यादा हो गये।
बच्चे-बच्चे के रूम भी सेपरेट हो गये
कमरे आज बैडरूम, वॉशरूम, लिविंग रूम हो गये।।

आज अपनो को अपनो से ही परिचय चाहिए
रू-आफज़ा के दिन आज पुराने हो गये।
अब फेमस रियल जूस और ट्रॉपीकॉन हो गये।
कैंडल लाईट में करते थे हम पढ़ाई
आज रह गये वो जस्ट फार डिनर ऑफ कैंडल लाईट।।

लाईट जाने पर सब होते थे इक्ट्ठे
मिल कर खेलते थे छुपन-छुपाई
इन्वर्टर ने छीन लिए आज वो मीठे पल
वापिस नहीं आ सकता हमारा बीता हुआ कल।।

AVAILABLE FOR RENT

Newly constructed villa with good ambience in the Posh area of **Shubkhera** is available for the Guest House/ Individual use of PG. "Accommodations is of 05 fully furnished AC bed rooms with attached wash room".

Common lobby, Modular kitchen with fridge & gas stove and parking facility with separate entry.

" If Interested please contact"
MANMIT SINGH
Cont: 9805070502

सदस्य बाल क्लब

गुरेन्द्र

नाम: गुरेन्द्र सिहं
जन्म : 30–11–2012
माता/पिता: जसवंत कौर/ हरजिन्द्र सिहं
नाना/नानी: जगीर सिहं/जोगेन्द्र कौर
दादा/दादी : हरजीत सिहं/महेन्द्र कौर
मामा/मामी : महेन्द्र सिहं/ हरजिन्द्र कौर
बहन: अवलीन कौर
बुआ/फूफा : कुलजीत कौर/जसबीर सिहं
कक्षा : द्वितीय
मित्र: बबदीप सिहं
स्कूल : बी के डी पब्लिक स्कूल पांवटा साहिब।
सबसे ज्यादा प्यार करती हैं: मम्मी
बडे होकर बनेगे –फोजी
खाने में पसन्द: केला
अच्छा लगता है: खेलना दौड़ना
पता : गांव खारा तह पांवटा.

हिमाचल निर्माता -राष्ट्र गौरव डॉ. यशवन्त सिंह परमार

एक गरीब मुख्यमंत्री

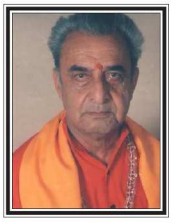

❖ आचार्य चन्द्रमणि वशिष्ठ "पहाड़ी मृणाल"

'**हिमवन्ती**' के पाठक पिछले कुछ वर्षों से हिमाचल के प्रसिद्ध साहित्यकार ब्रह्मलीन आचार्य चन्द्रमणि वशिष्ठ के आलेख, कविता, कहानी परक सत्साहित्य का रसास्वादन करते आ रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे।

आचार्य वशिष्ठ जहाँ लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार रहे हैं, वहीं अपनी आराधना, साधना व तपोनिष्ठ जीवन के कारण अध्यात्म जगत् में गुरु पद प्रतिष्ठित भी रहे हैं। अपने इस साधनाकाल में उन्होंने कई ऐसे चमत्कार अथवा कृपाएँ देखी हैं जिन पर सहज विश्वास कर पाना सरल नहीं।

वशिष्ठ जी ने हिमाचल निर्माता -राष्ट्र गौरव डॉ. यशवन्त सिंह परमार" पुस्तक भी स्वयं लिखी है जिसे वशिष्ठ जी ने बड़ी खूबसूरती से प्रस्तुत किया है वह अति उत्तम है। अपने इस धारावाहिक में हम वशिष्ठ जी की इसी विशेष पुस्तक से पाठकों को परिचित करवा रहे हैं-

-सम्पादक

मैंने बचपन में पढ़ा था कि सम्राट चन्द्रगुप्त के प्रधानमंत्री आचार्य चाणक्य से मिलने सांझ के समय एक विदेशी विद्वान आए। आचार्य महल में थोड़ी दूर एक कुटीर में रहते थे। सरसों के तेल का दीपक जल रहा था, वह कुछ पढ़ रहे थे। विद्वान ने उन्हें प्रणाम किया और आसन ग्रहण किया। वार्तालाप प्रारम्भ हुआ, तभी आचार्य ने पास रखे दूसरे दीपक को जला दिया, पहला बुझा दिया। हालांकि दीपक में तेल काफी था। वार्तालाप चलता रहा। लगभग 20 मिनट पश्चात् जब विदेशी विद्वान जाने लगे तो उन्होंने पूछ लिया, 'मैं समझा नहीं, आपने एक दीपक जलाया, पहला जलता दीपक बुझाया, भला क्यों?' आचार्य चाणक्य बोले, 'जब आप आए, मैं राजकीय हिसाब किताब पढ़ रहा था। सम्राट द्वारा प्रदत्त तेल तब दीपक में जल रहा था। जब हमारा वार्तालाप प्रारम्भ हुआ तो यह तो राजकीय कार्य नही है ना। मैंने अपने सरसों के तेल के दीपक को जला दिया।' विशाल भारत के महाशक्तिशाली सम्राट के शक्तिशाली प्रधानमंत्री का यह उत्तर सुनकर हैरान हो गया था विदेशी विद्वान। उसने उनके पाँव छुए और कुटीर से बाहर चला गया।

यह बात बचपन में पढ़ी थी। जवानी में देखने को मिली। एक और प्रधानमंत्री तो नही एक मुख्यमंत्री मिले। डॉ. परमार अपने किसी निजी काम में सरकारी गाड़ी, कर्मचारी सामान, धन या किसी भी वस्तु जैसे फर्नीचर आदि का प्रयोग नही करते थे। वह किसी भी अधिकारी को कोई ऐसा काम नहीं सौंपते थे जो काम उनका निजी हो। बागथन में जलाल के पास उनका छोटा सा, बहुत ही छोटा सा घर इस बात का गवाह है कि उनकी पसंद कैसी थी और आर्थिक दशा कैसी थी। उनके पास घर की मुरम्मत को भी पैसे नही होते थे। चरपड़ी गांव में अपने दूसरे बेटे जयपाल सिंह जुग्गी के लिए उन्होंने जो घर बनाया वह भी बहुत ही छोटा है। नाहन में रियासत में पढ़ाई के लिए जो कर्ज लिया था, वह वापिस नहीं किया जा सका, इस वास्ते नाहन का मकान नीलाम हुआ। उस मकान को नीलाम करने का निर्णय तथा रियासयत के न्यायधीश डॉ. परमार ने खुद ही दिया था।

डॉ. परमार के पास अपनी कार, जीप, वैन कुछ नही था। जब वह मुख्यमंत्री नहीं थे, मोटर बस में बैठकर सफर करते थे। लोग पूर्व मुख्यमंत्री को बस में सफर करते देखकर हैरान रह जाते थे। एक बार देहली तक बस में इक्ट्ठे सफर करने का मुझे भी मौका मिला। वह बहुत सादा-सादा सा पहनते थे। कपड़ों का रंग बड़ा हल्का-फुल्का और कपड़े की दर सस्ती। किसी भी प्रकार का लिबास डॉ. परमार पहन लें, कोट पैंट पहनें, बास्कट कुर्ता या बास्कट कमीज, पैंट या थोड़ा खुला पायजामा, उन्हें सब फबता था। बंद गले की बास्कट जो रीढ़ की हड्डी के आखिरी हिस्से तक लम्बी होती थी-पहनते थे परन्तु उसमें नई बात यह थी कि बास्कट के कोट की तरह बाजू होते थे और वह खुले नही होते थे। आगे से कमीज जैसा कफ होता था उसमें बटन लगते थे। उनको वह बहुत फबती थी। यह बास्कट 'परमार कट' के नाम से प्रसिद्ध हुई। बगैर बाजू की बास्कट 'जवाहर कट' कहलाती है।

वह हाथों में कोई बेशकीमती नग, साधारण नग या अंगूठी आदि धारण नही करते थे। हाँ, जब उनका दूसरा विवाह हुआ था, तब सोने की एक अँगूठी कुछ दिन मैंने उनके हाथ में देखी थी। कड़ाके की सर्दी पड़ रही हो, ठंड में कोई सभी हो, समारोह हो, वे हीटर नही सकते थे। उन्हें गर्मी-सर्दी सहने की आदत थी। उन्हें आर्थिक तंगी रहती थी। वे परिवार के कमाऊ पुत्रों से भी कुछ लेते नहीं थे। अलबत्ता जितनी हो सके उनकी सहायता कर देते थे।

उनके बेटे तथा बेटियाँ उनका बहुत आदर करते थे, उनसे प्यार करते थे, आज भी करते हैं। वह भी अपने बेटों, पोतों और दोहतों से बहुत प्यार करते थे परन्तु उसके लिए भी एक समय था। वह हर एक से मिलते थे परन्तु समय के अनुसा। वह समय के पाबन्द थे। परिवार वालों से कब मिलना है, मित्रों से कब मिलना है, जनता के लिए ज्यादा से ज्यादा कितना समय निकाला जा सकता है, जो लोग बाहर से, विदेश से उन्हें मिलने आते थे उनसे काम में से चंद लम्हें निकालकर कब और कैसे मिलना है, यह तय था।

वह कहते थे मुख्यमंत्री तो सारे प्रदेश का होता है, उसका ध्यान प्रदेश के चप्पे-चप्पे पर रहना चाहिए और

उनका ध्यान चप्पे-चप्पे पर रहता था। एक दो चुनावों के दौरान ऐसा हुआ कि वह अपने चुनाव क्षेत्र रेणुका जी में जा ही नही सके। वह पूरे हिमाचल में प्रचार कार्य में व्यस्त रहे, अतः अपने निर्वाचन क्षेत्र में जाने का समय नही निकाल पाए। उन्हें निर्वाचन क्षेत्र के लोगों पर भरोसा था। भरोसा कभी टूटा नही। वह आए नही तो कोई बात नही, उन्हें लोगों ने बहुत भारी मतों से विजयश्री दी। वह बहुत ही लोकप्रिय थे। कोई मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश में इतना पैदल नही घूमा जितना डॉक्टर परमार घूमे। प्रजामंडल की तहरीक के जमाने में, फिर हिमाचल बनने पर और फिर बराबर जब-जब उन्होंने मुख्यमंत्री का पद ग्रहण किया वह गांव -गांव पैदल घूमते थे। बड़े अधिकारियों को भी साथ घूमना पड़ता था। लोगों की ज्यादातर समस्याएं वह तुरन्त मौके पर ही सुलझा देते थे।

लोग हालांकि जानते थे कि मुख्यमंत्री उनके गाँव में दोपहर 3 बजे आयेंगे या दो बजे का कार्यक्रम छप कर आया है परन्तु लोग सुबह ही से अपना काम निपटाकर सड़कों में बैठ जाते थे। ढोल-नगाड़े बजाना शुरु कर देते थे। वह इतने प्यारे थे लोगों को। जब कभी वह अपने निर्वाचन क्षेत्र रेणुका में आते तो अपने गांव में उनका स्वागत करके जब वह दूसरे गाँव को चलते तो बहुत सारे लोग साथ चलते। आखरी गांव पहुँचते-पहुँचते तक एक मेला सा लग जाता था। मैने यह दृश्य अपनी आँखों से देखे हैं। उनके रेणुका चुनाव क्षेत्र में नोहरा के तुलसी राम चौहान, हीरा सिंह चाड़ना, उदय चंद यात्री गराड़ी, महाशय सही राम गराड़ी, भागचंद शामरा और सही राम-जातीराम हरिपुर धार चेतराम लुधियाना-अंधेरी, अमर सिंह दाना घाटों, काहनीयाराम रजाना, सालक राम भवाई आदि आदि उनके सहयोगियों तथा वर्करों में थे।

पसीने की कीमत

खुशहालपुर में नारायण नामक एक अमीर साहूकार रहता था। उसका बेटा और एक बेटी थी। लड़की की शादी हुए तीन साल हो गयें थे और वह अपने ससूराल में खुश थी। लड़का राजू वैसे तो बुद्धू नहीं था लेकिन गलत संगत में बिगड़ सा गया था। अपने पिता के बहुत पैसा हैं यह उसे घंमड हो गया था। दिनभर अपने आवारा दोस्तों के साथ घूमना फिरना ही उसे अच्छा लगता था। जैसे जैसे वह बड़ा हुआ पैसे खर्च करने की आदत बढ़ती गयी और वह अपने दोस्तों के कहने पर पानी की तरह पैसा बहाने लगा। मेहनत की कमाई अपना बेटा ऐसे गंवा रहा है यह देख नारायण को चिंता होने लगी। उसकी इच्छा थी कि राजू बेटा बड़ा होकर सरा करोबार संभाल ले और वह अपनी पत्नी के साथ तीर्थयात्रा पर निकल जायें। अपने बेटे को समझ आने की आस लगाये बैठा नारायण बुढ़ापे की और बढ़ रहा था। फिर उसने गांव के विद्वान गृहस्थ थे सलाह लेने की सोंचा। दोनों ने मिलकर सलाह मशवरा किया। खुब बातें हुई। दूसरे दिन नारायण ने राजू को बुलाया और की "बेटा राजू घर से बाहर जा कर शाम होने तक हुछ भी कमाई करके लाओगे तभी रात का खाना मिलेगा। राजू डर गया और रोने लगा गया। उसे रोता देख मां की ममता आडे आ गयी। मां ने राजू को एक रूपया निकाल कर दिया। शाम को जब नारायण राजू से पूछा तो उसने वह एक रूपया दिखाया। पिता ने वह रूपया राजू को कुए में फेंकने क लिये कहा। राजू ने बिना हिचकिचाहट के वह रूपया फेंक दिया। अब नारायण को अपनी पत्नी पर शक हुआ और अपनी पत्नी को उसके भाई के घर भेंज दिया। दूसरे दिन राजू की वैसे ही परीक्ष ली गयी। इस बार राजू की मां मायके गई हुई थी। राजू अपनी बहन क आगे गिडगिड़या। तरस खाकर उसकी बहन ने उसे 5 रूपये दियें। उस दिन भी पिता के कहने पर राजू ने पैसे कुएं में फेक दियें। फिरसे नारायण को लगा कि दाल में कुछ काला है। उसने अपनी बेटी को ससुराल वापस भेज दिया। अब तीसरी बार राजू का इम्तहान होना था। अब उसे साथ देने वालों में से ना मां थी न ही बहन और कोई दोस्त सामने आया। राजू सारा दिन सोचता रहा। मेहनत कर के पैसे कमाने के अलावा कोई हल नजर नहीं आ रहा था। भूख भी लगने लगी थी। रात का खाना बिना कमाई के मिलने वाला था नहीं। राजू काम ढूंढने निकल पड़ा। पीठ पर बोझ उठाकर दो घटें मेहनत करने के बाद उसे रूपया नसीब हुआ। भूख के मारे वह ज्यादा काम न कर सका। शरीर भी थक कर जवाब देने लग गया था। ओर परीने से भीगा राजू 1 रूपया लेकर घर पहूँचा। उसे लग रहा था पिता को उसकी हालत पर तरस आयेगा। लेकिन नारायण ने उसे सबसे पहले कमाई के बारें में पुछा। राजू ने अपना एक रूपया जेब से निकाला। पहले के भाँति नारायण ने 1 रूपया कूँए में फेंकने के लिये कहा। अब राजू छटपटाया। उसने अपने पिता से कहा"आज मेरा कितना पसीना बहा हैं 1 रूपया कमाने के लियें। इसे मैं नहीं फेंक सकता। जैसे ही ये शब्द मुंह से निकला उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। नारायण खुश हुआ उसे कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ी। अब राजू को पैंसों की कीमत पता चल गयी हैं ऐसा सोचकर नारायण भी तैयारी में जुट गया। तो बच्चों मेहनत का मोल ऐसे होता हैं। पसीने की कीमत पसीना बहाकर ही पता चली हैं। मेहनत पसीने से की गयी है कमाई ही खरी कमाई हैं। **(साभार हिन्दी फीचर)**

बार एसोसिएशन के प्रधान पद के लिए चुनाव 2 नवम्बर को

पांवटा (ब्यूरो). पांवटा साहिब के बारे एसोसिएशन के प्रधान पद के लिए चुनाव 2 नवंबर को होंगे। बार एसोसिएशन के चुनाव ट्रिब्यूनल चेयरमैन आत्मा राम शर्मा, सदस्य अनिल ठाकुर,व नरेश तोमर की देखरेख में चुनाव करवाया जाएगा। चुनाव ट्रिब्यूनल के चेयरमैन आत्मा राम शर्मा ने बताया कि वर्ष 2019-20 के बार एसोसिएशन के प्रधान पद हेतु चुनाव की घोषणा कर दी गयी है। चुनाव 2.11.19 को सुबह 10.30 बजे से दोपहर 3.30 तक चुनाव करवाए जाएंगे तथा उसी दिन चुनाव का रिजल्ट घोषित किया जाएगा। अगर आपसी सहमति से प्रधान पद के लिए चयन किया जाए तो चुनाव नहीं करवाया जाएगा व सर्वसहमति से उसे प्रधान पद के लिए चयनित किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि इस बार के चुनाव में 152 अधिवक्ता वोट डाल सकेंगे जिन्होंने नियम अनुसार खुद आकर दस्तखत कर अपनी पिछली देनदारियां निपटाई है। पिछले वर्ष 2018-19 में हरप्रीत शाह पांवटा साहिब के बार एसोसिएशन के प्रधान थे जिनके प्रधान पद के कार्यकाल पूरा होने के बाद नए प्रधान पद के लिए चुनाव करवाया जाएगा।

दीपावली की हार्दिक शुभकमानाएं

अमृतसरी चूर-चूर नॉन

❖ पनीर नॉन
❖ आलू नॉन,
❖ प्याज नॉन
❖ मशरूम नॉन
❖ न्यूट्री नॉन
❖ पनीर कोर्न नॉन
❖ गोभी नॉन

❖ लंच-
❖ नॉन की प्लेट,छोले,रायता,दो नॉन -70/-रूपये

❖ डिनर
❖ पनीर, दाल,+ रोटी, चावल थाली 80/-

❖ साग हॉफ- 60/- फुल प्लेट-100/-

❖ स्पेशल थाली
❖ सरसों का साग+मक्की की रोटी+ मक्खन 80/-रूपये

गुरमीत सिंह

फोन: 8219418139

REQUIREMENT OF TRAINERS FOR:

1. ASSISTANT ELECTRICIAN
2. LAB-TECHNICIAN
3. DATA ENTRY OPERATOR (IT/ITES)

QUALIFICATION:- DIPLOMA/DEGREE IN RESPECTED FIELD WITH 4/5 YEAR EXPERIENCE.

PREFERENCE WILL BE GIVEN TO T.O.T.CERTIFIED (Training Of Trainer).

HANDSOME PACKAGE WITH T.A/D.A & P.F. ESI.

FOR MORE DETAILS CONTACT THE CENTER MANAGER:

Pradhan Mantri Kaushal Kendra Vill:- Bhuppur Near Baweja petrol pump opp. Chadha Honda Agency, Paonta Sahib,H.P. 173025.

Mobile No:-8219575754.

SALE

सबसे अधिक वैरायटी, सबसे उचित दाम

SALE

पांवटा हैंडलूम हाउस

करो योग रहो निरोग

मात्र 150 में आधुनिक डिजाइनों वाला पर्दा प्राप्त करें।

❖ पर्दे
❖सोफा क्लाथ
❖ सोफा कवर
❖ पर्दे पाईप
❖कारपेट
❖रैक्सीन
❖पी.यू. फोम
❖टेबल क्लाथ

❖सोफा मटीरियल
❖डायनिंग एवंसेंटर
❖सोफा कुशल
❖गद्दे
❖बैड शीट
❖पायदान
❖फ्लोरिंग
❖तकिए

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें

हिमवन्ती की बात

देखना होगा मोदी का कद बढ़ेगा या नहीं

हरियाणा व महाराष्ट्र विधानसभा के चुनाव हो चुके हैं लेकिन इन दोनों राज्यों में ही मतदाता मतदान के प्रति उत्साहित नहीं दिखे। हरियाणा में तो 19 साल में इस बार सबसे कम वोटिंग हुई। यही नहीं महाराष्ट्र में भी 2014 विधानसभा चुनाव की अपेक्षा कम मतदान हुआ। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि हरियाणा और महाराष्ट्र में नई सरकार चुनने के लिए मतदाताओं ने ज्यादा उत्साह नहीं दिखाया। हरियाणा में पिछले कई चुनावों में लगातार 70 प्रतिशत से अधिक मतदाता अपने मतदाताधिकार का प्रयोग करते आए हैं लेकिन इस बार 64.35 प्रतिशत मतदाता ही मतदान के लिए मतदान केन्द्र पर पहुँचे। महाराष्ट्र में भी कमोवेश कम ही मतदाता मतदान के लिए अपने घरों से कम ही निकले।

प्री–पोल बता रहे हैं कि इन दोनों ही राज्यों में भाजपा फिर से सत्तासीन होने जा रही है। लेकिन दोनों ही राज्यों में जो मत प्रतिशत घटा है इससे यह तो साफ हो गया है कि भाजपा की लोकप्रियता में या तो कमी आई है या लोग सभी राजनैतिक दलों से ऊब चुके हैं।

वर्ष 2014 के चुनाव में हरियाणा और महाराष्ट्र दोनों ही राज्यों में भाजपा ने हरियाणा की पारम्परिक राजनीति को चुनौती देते हुए गैरजात मनोहर लाल खट्टर को तथा महाराष्ट्र में गैर मराठा, देवेन्द्रपड़ नवीस को मुख्यमंत्री बनाया था और इसब ार भी इन दोंनो चेहरों को ही आगे रखकर चुनाव पड़े हैं। इन्हें विपक्ष से कोई चुनौती मिली है या नहीं यह तो 24 अक्टूबर को ही पता चलेगा लेकिप प्री–पोल मुख्य रूझानों के अनुसार भाजपा इन दोनों राज्यों में ही ओर अधिक सीटें पाकर काबिज़ होने जा रही है। छ्त्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में जो उपचुनाव हो रहें हैं वह भी भाजपा के साथ–साथ कांग्रेस के लिए भी बड़े महत्वपूर्ण है क्योंकि इन दोनों राज्यों में एक–एक सीट का ही बहुत महत्व है। यदि इन दो राज्यों में भाजपा उप चुनाव में हार जाती है तो यह उसकी साख पर बड़ा धब्बा होगा।

हिमाचल में दो सीटों पर उपचुनाव हुआ है यह दोनों ही सीटें भाजपा के विधायकों के इस्तीफा देने से व लोक सभा में पहुँचने पर हुई खाली सीट पर हुए हैं हालांकि सिरमौर जिला के पच्छाद निर्वाचन क्षेत्र व धर्मशाला विधानसभा क्षेत्र से लोक सभा चुनाव में इन्हीं क्षेत्रों से जीत हासिल की थी लेकिन इस बार उदोनों ही विधानसभा क्षेत्रों में विद्रोही उम्मीदवारों के खड़े होने से मामला काफी बेचिदा हो गया है। सिरामौर के पच्छाद विधानसभा क्षेत्र में भाजपा की विद्रोही नेता दयाल प्यारी जीत की दौड़ में थी। इन्होंने जिस तरह चुनाव लड़ा उससे ऐसा लग रहा है कि उनकी मंशा भाजपा को चुनान हराना नहीं बल्कि खुद चुनाव जीतना है। यहां से कांग्रेस ने भी अपने अनुभव व सात बार चुने जाने वाले अनुभवी उम्मीदवार गंगूराम मुसाफिर को मैदान में उतारा है इसलिए इस विधानसभा क्षेत्र में तो माला काफी रोचक हो गया है और तीनों ही उम्मीदवारों के प्रशंसक अपने–अपने उम्मीदवार की जीत का दम भर रहे हैं।अगर हिमाचल में किसी एक सीट पर भी भाजपा हार जाती है तो यह राज्य सरकार के लिए एक बडी हार होगी।

– अरविन्द गोयल

प्रमुख अंतरराष्ट्रीय कम्पनियों के सम्पर्क में रहें सभी विभाग- बाल्दी

शिमला (प्रे.वि). मुख्य सचिव डॉ. श्रीकांत बाल्दी ने ध र्मशाला में प्रस्तावित ग्लोबल इंवेस्ट मीट की तैयारियों की समीक्षा करते हुए सम्बन्धित विभागों को निर्देश दिए कि वे इस महत्त्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने के लिए अपनी सक्रिय भूमिका निभाएं और प्रमुख अंतरराष्ट्रीय कम्पनियों के सम्पर्क में रहें ताकि इंवेस्टर मीट के दौरान प्रदेश सरकार द्वारा प्रमुख विदेशी कम्पनियों के साथ आयोजित होने वाली बैठकों को सफल बनाया जा सके। डॉ. बाल्दी ने कहा कि इस मीट में बढ़ी संख्या में विदेश व देश के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं और उनके आने का मुख्य उद्देश्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कर व्यापार करना है, इसलिए सम्बन्धित विभागों को आरम्भिक प्रक्रिया को पूरा कर लेना चाहिए ताकि समझौता ज्ञापनों को अंतिम रूप दिया जा सके। उन्होंने निवेशकों की सुविधा के लिए अलग से अधिकारियों को नियुक्त किया जाना चाहिए ताकि निजी क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने उद्योग विभाग को 'बिजनेस टू गर्वनमेंट' बैठकों की तैयारियों के बारे हर दो दिन के बाद उन्हें रिपोर्ट प्रस्तुत करें अगर किसी स्थिति में कम्पनियों से जुड़ा कोई मुद्दा होगा तो वे इसकी जांच खुद करेंगे। उन्होंने कहा कि निवेशकों को यह संतुष्टि हो कि हिमाचल प्रदेश सरकार सर्वोत्तम सेवाएं प्रदान कर रही है। डॉ. बाल्दी ने सभी सम्बन्धित विभागों को निर्देश दिए की वे निवेश परियोजनाओं, उपलब्ध भूमि (सरकारी व निजी), उपलब्ध प्रोत्साहन, सभी नोडल अधिकारी के नम्बर से जुड़ी जानकारी की विवरणिका बनाएं और उसे सभी निवेशकों को दें ताकि उन्हें सम्बन्धित निवेश की संभावनाओं की जानकारी उपलब्ध हो सके।

इन्द्र के विचार

मुस्कराना जिन्दगी का वो खुबसूरत लम्हा
है.. जिसका अंदाज सब रिश्तो से अलबेला है..!
जिसे मिल जाये वो तन्हाई में भी खुश,
और जिसे ना मिले
वो भीड़ में भी अकेला है..!!
जय जय सियाराम

इन्द्र प्रकाश गोयल

वनस्पति चर्चा

पोषण और पर्यावरणीय दृष्टि से लाभदायक है

सूर्यमुखी

पं.गौरी प्रसाद
पूर्व मंत्री

सदा सूर्या मुख रहने वाले फूल सूर्यामुखी को हम सब जानते पहचानते हैं। इन फूलों में सूर्य की दिशा और उसकी किरणों के प्रति गज़ब की संवेदनशीलता रहती है। सूर्य के साथ ही इसका निखार क्रमशः बढ़ने लगता है। ज्यों–ज्यों सूर्य किरणों में प्रखरता घटती जाती है त्यों–त्यों ये भी कुम्लाने लगते हैं। सूर्य अस्त होते ही इसकी पहले वाली चमक मंद हो जाती है।

प्रारम्भ में लोग इन फूलों को अपने उद्यानों में मात्रा शोभा के लिए मनोरंजन हेतू लगाया करते थे लेकिन जब से विज्ञानिकों ने इसके बीज और तेल का एक पौष्टिक और रोग संहारक पदार्थ के रूप में अन्वेषण किया है तब से इसकी मांग काफी बढ़ गई है। यही कारण है कि भारत भर में व्यावहारिक रूप से इसका उत्पादन होने लगा है। सूर्यमुखी के लिए दो प्रकार की भूमि ऊंचाई और तराई की उपयोगी है। जब भारतवर्ष में इसकी खेती दो प्रकार से की जा सकती है। हिमाचल प्रदेश में भी तराई की भूमि में दो बार इसकी मांग काफी बढ़ गई है। यही कारण है कि भारत भर में व्यावसायिक रूप से इसका उत्पादन होने लगा है। सूर्यमुखी के लिए दो प्रकार की भूमि ऊंचाई और तराई की उपयोगी हैं जब भारतवर्ष में इसकी खेती दो प्रकार से की जा सकती है। हिमाचल प्रदेश में भी तराई की भूमि में दो बार इसकी उपज ली सकती है और ऊंचाई वाले पर्वतीय स्थानों में इसकी बिजाई अप्रैल मई में की जाती है और सितम्बर अक्टूबर तक फूलों से काले भूरे चपटे से बीज पककर तैयार हो जाते हैं।

सूर्यमुखी की विशेषतायें:– आखिर क्या विशेषताएं हैं सूर्यमुखी में कि इसने विश्वभर के वैज्ञानिकों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। वैज्ञानिकों ने इसके बीजों और इससे प्राप्त तेल पर अपनी अनुसंघात्मक नज़र डाली तो इनमें उपलब्ध पोषक तत्व की समृद्धता को देखकर चकित रह गए। विशेष कर प्रोटीन विटामिन ए. वी.और डी. का तो यह बहुत ही बेहतरीन स्त्रोत साबित हुआ। इसके बीजों में प्रोटीन की उपस्थिति 35 से 40 प्रतिशत पाई गई है। विदेशी वैज्ञानिकों ने सूर्यमुखी के पोषक तत्व पर और भी गहन शोध करकरे बहुत सी जानकारियां हासिल की हैं। अमरीकन वैज्ञानिकों प्रो. इज़र विलियम के कथनानुसार सूर्यमुखी के पोषक तत्व प्राकृत तौर पर निर्दोष तो होते ही हैं। साथ ही साथ यह उत्कृष्ट कोटि के भी होते हैं। इस कारण इसके बीज या तेल के सेवन से किसी तरह का अवांछनीय प्रभाव नहीं होता उन्होनें इसे प्रोटीन की कमी से उत्पन्न रोग "कृाशियारेकर" और विटामिन ए0 की कमी से नेत्र रोगों और रतौंधी आदि में काफी उपयोगी बतलाया है।

यूं तो प्रोटीन के अन्य कई समृद्ध स्त्रोत प्रकृति में हैं लेकिन सभी में शरीर के लिए बेहद आवश्यक बीच में दस एमिभे एसिड या तो मिलते ही नहीं या मिलते भी है तो बहुत कम मात्रा में। उल्लेखनीय है इन दस एमनो अमलों का निर्माण शरीर खुद नहीं कर पाता इसलिए इन की आपूर्ति प्रतिदिन खाये जाने वाले आहार से लगभग होना जरूरी होता है। सूर्यमुखी में इन एमिमोएसिड की मात्रा 40 प्रतिशत तक होती है।

सूर्यमुखी के तेल में सबसे महत्वपूर्ण गुण जो शोधोपरान्त उभर कर सामने आया है वह है उसका रक्त में कोलेस्ट्रोल को रोकना। वैज्ञानिकों ने ऐसे अनेक व्यक्तियों सर्यमुखी के तेल का सेवन कराया जिनके रक्त में कोलेस्ट्रोल की वृद्धि हो गई थी। उन्होनें पाया कि इसके सेवन के बाद उनके रक्त में कोलेस्ट्रोल की वृद्धि रूक गई। इसलिए रक्तचाप हृदय रोगों के लिए इसका तेल बहुत उपयोगी है। विदित हो कि रक्त में कोलेस्ट्रोल की वृद्धि रक्तचाप हृदय रोग सम्बन्धि अनेक रोगों और समस्याओं को जन्म देती है। इसके अतिरिक्त इसमें 35 प्रतिशत फोस्फोरस की उपस्थिति मस्तिष्क एवं ज्ञान तन्तुओं को चेतन प्रदान करती है। 8 प्रतिशत के लगभग कैल्शियम अस्थियों को आवश्यक पोषण प्रदान करने में समर्थ हैं। बढ़ते बच्चों के लिए सूर्यमुखी के पोषक तत्व काफी फायदेमंद होते हैं। प्रोटीन कैल्शियम फास्फोरस विटामिन 'ए' और 'डी' बच्चों के लिए विशेष तौर से आवश्यक है और सूर्यमुखी के बीजों या तेल में इन सबका अच्छा अनुपात रहता है इसके अलावा इसमें मैग्नीशियम–पोटाशियम–कापर विटामिन वी और ई भी यथार्थ मात्रा में पाए जाते हैं। पोषण वैज्ञानिकों के अनुसार सूर्यमुखी से दूध की कमी पूरी की जा सकती है। वैसे भी व्यस्कों में दूध पचाने वाला एज्ज़ायम देनिन पर्याप्त मात्रा में न रहने से दूध का पूरा अंश अब शोषित नहीं हो पाता वैसी हालत में सूर्यामुखी इस कमी की पूर्ति कर सकती है। गरीबी के कारण अधिकांश बच्चों को दूध नसीब नहीं हो पाता ऐसे बच्चों के लिए सूर्यमुखी के बीज वरदान साबित हो सकते हैं। तिल की भांति इन्हें सीधे चबाकर या गुड़ आदि के मादक व्यंजन के रूप में तैयार कर खाया जा सकता है। अथवा इसके तेल का प्रयोग किया जा सकता है। सूर्यमुखी के वैज्ञानिकों ने एक और विलक्षण गुण की तलाश की है वह यह है कि तुलसी की तरह सूर्यमुखी के पौधे भी अपने आस–पास की वायु को रोगाणु एवं प्रदूषण मुक्त रखते हैं। इस तरह सूर्यमुखी पोषण और पर्यावरणीय दोनों ही दृष्टि से लाभदायक हैं। इसलिए हिमाचल के कृषि विभाग और सरकार को इसके उत्पादन में अधिक ध्यान देना चाहिए और उत्पादकों को अच्छा बीज समय पर वितरण होना चाहिए।

रोचक जानकारी:– खतरा देखकर चेहरा पीला क्यों पड़ जाता है। जब कभी खतरा सामने होता है तब हमारा मस्तिष्क कुछ ऐसे तांत्रिक आवेग भेजता है जो त्वचा की कोशिकाओं को तुरन्त किन्तु अस्थाई रूप से सिकुड़ने को कहते हैं। परिणाम स्वरूप कोशिकाओं को संकुचित हो जाने से कुछ क्षणों के लिए चेहरे की त्वचा नाजुक कोमल व अर्थ पारदर्शी होती है जिस कारण रक्त वाहनियों के प्रवाह में बाधा उत्पन्न होती है। अतः रक्त संचरण बाधित होने से चेहरा पीला पड़ जाता है। शरीर के किसी भाग में मोच आने से सूजन क्यों होती है। शरीर के किसी भाग में मोच आ जाने से इस भाग की कोशिकायें वृद्धि करना शुरू कर देती हैं जिस के कारण सूजन आ सकती है।

व्यक्ति की भावात्मक दशा के द्योतक आँसू

आंसू प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और भावात्मक दशा के द्योतक हैं। इतने पर भी यह कहना कि आंख की हर बूंद पीड़ा का परिणाम है, उचित न होगा। यह हर्ष की परिणति है, वियोग का नतीजा और दुख का प्रतीक भी, यह अब उसके रासायनिक विश्लेषण से स्पष्ट हो चुका है।

अब तक की मान्यता थी कि अश्रु चाहे किसी भी मनोकायिक अवस्था की फलश्रुति क्यों न हो, उसकी बनावट सदा एक–सी होती है, परन्तु गहन अध ययनों से इस अवधारणा को गहरा आघात पहुंचा है। वैज्ञानिकों ने यह सि) कर दिया है कि रसायनिक दृष्टि से प्रसन्नता के आंसू विषाद से अलग होते हैं एवं विछोह की पीड़ा से जो दृग्जल निस्सृत होता है, उसमें प्रेम के उद्रेक से प्रवाहित होने वाले नीर से तत्व नहीं होते।

बिना विश्व विद्यालय के रसायनज्ञ सी फ्रीडमैन ने इसके लिए लोगों के दो वर्ग बनाये। प्रथम में उन्हें रखा गया, जो असह्य कार्य का कष्ट झेल रहे थे। दूसरी श्रेणी उनकी बनायी गयी जो भीषण मानसिक संत्रास से गुजर रहे थे। तीसरा समूह उन व्यक्तियो का था जो प्रेम में उन्मत थे और जिनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं। इन तीनों अवस्थाओं के आंसू एकत्रित किए गए और उनके रसायनिक गुणों का अध्ययन किया गया। डॉ. फ्रेंडमैन का कथन है उनमें स्पष्ट अंतर दृष्टिगोचर हुआ। उनके अनुसार सबकी मूल संरचना एक ही थी पर दशान्तर का स्फुट प्रभाव उनके रसायन शास्त्रा में परिलक्षित हुआ। प्रसन्नता के आंसू में स्वास्थ्य–वर्धक कुछ ऐसे रसायन पाये गये जिनकी उपस्थिति आरोग्यशास्त्रा की दृष्टि से अच्छी मानी जाती है। दूसरी ओर शारीरिक और मानसिक व्यथा अश्रु में ऐसे तत्वों की प्रधानता थी, जिन्हें स्वास्थ्य की दृष्टि से अहितकर माना गया है और जो देह के लिए विषतुल्य साबित होते हैं। इन्हें शरीर से बाहर निकाल देना ही हर प्रकार से लाभकारी होता है। ऐसा चिकित्सा वैज्ञानियों का मत है। इसका एकमात्रा उपाय रोना है इसलिए अब रोने को भी हंसने की तरह एक स्वास्थ्य टॉनिक बताया जाता है। दोनों के प्रयोजन लगभग एक से हैं। हंसने में अन्दर के समस्त अंगों का व्यायाम और स्वास्थ्य में सुधार होता है।

अक्सर ऐसा कहते सुना जाता है कि रो लेने से मन का बोझ हल्का हो गया। यह केवल लोकोक्ति भर नहीं, वरन् एक वैज्ञानिक सच्चाई है। अनुसंधानों से मालूम हुआ है कि व्यक्ति जब निषेध ात्मक चिंतन में डूबा रहता है अथवा दारूण दुख से आकुल व्याकुल हो रहा होता है तो शरीर में ऐसे विषैले रसायनों का निर्माण होता है जो मन पर बोझ की तरह लद जाते हैं। इनका शरीर–मन पर द्विविध प्रभाव पड़ता है। काया में सुस्ती, आलस्य निष्क्रियता दिखलायी पड़ने लगती है और मन अवसादग्रस्त, अस्त व्यस्त, उत्साहहीन तथा भार भूत सा प्रतीत होने लगता है।

इस दौरान जब व्यक्ति दहाड़ मारकर रोता है तो अश्रूधारा के साथ वे तत्व बाहर निकल जाते है जो मन को अन्यमनस्क और शरीर को अस्वस्थ स्थिति में निरन्तर बनाए रहते हैं। इससे शरीर और मन हल्का हो जाता हैं। इसलिए वैज्ञानिकों की यह सलाह है कि जब हंसी का अवसर आए तो उन्मुक्त हंसी हंस लेनी चाहिए और विषादपूर्ण स्थिति को मन में दबाए नहीं रखना चाहिए। उसे भी रोकर निकाल ही देना चाहिए।

वास्तव में यह अवस्था कितनी दुखद होगी जिसमें व्यक्ति को न रोने की छूट हो, न हंसने की स्वतन्त्राता। परिणाम पागलपन होगा, कारण कि मानसिक संवेग, आवेग और उद्वेग को नियन्त्रित और निरस्त करने के दो ही मार्ग हैं–हंसना और रोना। जब ये दोनों ही बंद हो जाएं तो नतीजा अत्यंत दुखदायी होता है। यही कारण है कि विक्षिप्त लोग निरर्थक हंसते और निरूद्देश्य रोते रहते हैं। इसका निमित्त समझाते हुए मनोवेत्ता कहते हैं कि मन की यह आदत है कि वह स्वयं को दबावमुक्त रखना चाहता है जबकि आदमी उसके इस स्वभाव पर अंकुश लगा देता है और अनगिनत मनोव्यथाएं अपने अंदर पालता रहता है। पनपने और निकलने की उभयक्षीय प्रक्रिया चलती रहे, तो मन सहज स्थिति में बना रहता है, किन्तु जब बहिर्गमन का पथ अवरू) हो जाता है तो अनवरत रूप से एकत्रित होते असहाय बोझ को झेल पाने में मन असमर्थ होता है, जिसकी फलश्रुति पागलपन के रूप में सामने आती है। इस दशा में मनुष्य का सजग नियंत्राण उस पर से हट जाता है तो मन उस वजन को अपनी स्वाभाविक प्रक्रिया द्वारा हंस रोकर उतारने लगता है, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी होती है। इतने मात्रा से विक्षिप्तता दूर नहीं होती। उसके लिए अतिरिक्त उपचार की आवश्यकता पड़ती है।

दीवाली मिलन समारोह की झलकियाँ

दीवाली मिलन समारोह में उद्योगपति नरेन्द्र पाल सिंह सहोता, उद्योगपति अशोक गोयल, उद्योगपति अरूण गोयल एवं नवीन अग्रवाल।

दीवाली मिलन समारोह में उद्योगपति ठाकुर वीरपाल सिंह, उनकी धर्मपत्नी सरोज ठाकुर, अरूण गोयल एवं कविता गोयल के साथ प्रसन्नमुद्रा में।

दीवाली मिलन समारोह में अरूण गोयल एवं नीना गोयल व प्रथा गोयल नृत्य करते हुए।

दीवाली मिलन समारोह ज्ञानचंद गोयल एवं अरूण गोयल के साथ पंचकुला से पधारे चेयरमैन लोक अदालत।

दीवाली मिलन समारोह के शुभ अवसर पर अरूण गोयल अपनी धर्मपत्नी कविता गोयल के साथ नृत्य करते हुए।

यात्रा संस्मरण

खाटू श्याम-धाम के दिव्य दर्शन

आचार्य ओम प्रकाश 'राही'

'हारे का सहारा' – 'तीन बाण धारी' – 'कलियुग के देवता' आदि नामों से जाने जाने वाले 'खाटू नरेश' श्री श्याम जी के राजस्थान में विराजमान दिव्य धाम के दर्शन का सुअवसर प्राप्त हुआ तो हमने गुरु नगरी निवासी मित्र गिरिराज गुप्ता के परिजन वर्ग के साथ अपनी यात्रा 19 अक्टूबर को प्रातः ठीक 8:00 बजे आरम्भ की ।

पाँवटा–यमुनानगर सड़क पर कलेसर में विद्यमान प्राकृतिक सुषमा सम्पन्न शिव मंदिर मे देवाधिदेव के दर्शन उपरांत चाय का प्रसाद ग्रहण कर चालक अनिल के कुशल गाड़ी चालन के साथ आगे बढ़ते गये ।यह प्रभु की कोई विशेष कृपा ही रही कि हम ठीक एक बजे मंदिर के कपाट बंद होने से एकदम पहले श्री श्याम जी से संबंधित उस दिव्य चुलकाना धाम में पहुँचे जहाँ उनकी शीश दान के बाद की धड़ से सम्बंधित समाधि उस शीश दानी की याद दिलाती है ।इस समाधि स्थलस्थ दिव्य परिवेश मे अपना शीश नवाने के बाद हम आगे की राह के राही बने ।

फिर एक सुखद संयोग के अनुरूप सायं गोधूलि वेला में हम पहुँचे बेहरोड़ के देहवी माता मंदिर,जो गिरिराज परिवार सहित इस बहुत बड़े क्षेत्र की कुल देवी हैं और जहाँ सायंकालीन संध्या–उपासना के साथ आरती की तैयारी हो रही थी ।इस पवित्र वेला मे माता के श्री चरणों मे शीश नवाने तथा आरती मे सम्मिलित होने उपरांत हम फिर आगे बढ़े अपनी मुख्य यात्रा खाटू श्याम धाम की ओर ।

संभवतः आज खाटू श्याम जी हमें दर्शन नहीं देना चाहते होंगे,यही कारण रहा होगा कि बिल्कुल सही – सलामत चल रही हमारी गाड़ी वहाँ से मात्र पन्द्रह–बीस कि.मी. चलने उपरांत अचानक खराब हो गई ।चालक ने अपने विवेक का पूरा प्रयोग किया, चलभाष से जानकारी ली किंतु परिणाम शून्य ।रात के दस बजने वाले और हम अपरिचित स्थान पर विवश से खड़े ।गिरिराज जी ने अपने किसी मित्र से सम्पर्क किया और उनके सहयोग से गाड़ी को क्रेन से यथास्थान पहुँचाया गया और हम एक होटल पहुँचकर रात्रि विश्राम कर सके ।

दूसरे दिन अपरान्ह दो बजे तक हमें प्रतीक्षा करनी पड़ी और तब गाड़ी ठीक होने पर हम चले खाटू धाम की ओर,जहाँ हम फिर पहुँचे एक सुखद संयोग के साथ सांध्यकालीन आरती की तैयारी के समय ।मंदिर प्रांगण में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ । चार–चार लाइनों की लम्बी कतारों में श्रद्धालु जयकारों के साथ शनैः–शनैः आगे बढ़ते रहे मुख्य मंदिर की ओर ।'खाटू नरेश की जय'– 'हारे के सहारे की जय' – 'तीन बाणधारी की जय' जेसे जयघोषों के साथ हम पहुँचे मुख्य मंदिर के मुख्य द्वार तो भव्य श्रृंगार

से अलंकृत खाटू श्याम की मनोहारिणी झलक पाकर स्वयं को धन्य माना ।

उस अपार भीड़ मे इतनी सी झलक पाकर उस छवि को अपने मन–मंदिर में बिठाकर बाहर आए और तब वहाँ की कुछ मधुर स्मृतियों को सहेजते हुए अपनी गाड़ी में आकर इस मनोऽभिलाषा के साथ आगे बढ़े कि काश! हम कपाट बंद होने से पहले सालासर पहुँचकर बाला जी (हनुमानजी) के दर्शन भी कर सकें ।

हमारी यह कामना भी पूरी हुई और मार्ग मे किसी भी व्यवधान के बिना हम कपाट बंद होने से पहले वहाँ दिव्य दर्शन के साथ सत्संग लाभ प्राप्त कर सके ।

तदुपरान्त इन सभी मधुर स्मृतियों को सहेज कर हम रात्रि भोजन के पश्चात् अनवरत अपनी वापसी की यात्रा करते रहे और तीसरे दिन सुबह यात्रारम्भ समयानुरूप प्रातः सवा आठ बजे अपनी कर्मस्थली पाँवटा साहिब पहुँच गये ।इस सुखद और अविस्मरणीय यात्रा के लिए मित्र गिरिराज परिवार का विशेष आभार ।

धनतेरस क्यों मनाया जाता है?

कार्तिक मास की कृष्ण त्रयोदशी को धनतेरस कहते हैं।इस दिन घर के द्वार पर तेरह दीपक जलाकर रखे जाते हैं।यह त्योहार दीपावली आने की पूर्व सूचना देता है।इस दिन नए बर्तन खरीदना शुभ माना जाता है। धनतेरस के दिन मृत्यु के देवता यमराज और भगवान धनवंतरी की पूजा का महत्व है।

धनतेरस का त्योहार क्यों मनाया जाता है– भारतीय संस्कृति में स्वास्थ्य का स्थान धन से ऊपर माना जाता रहा है। यह कहावत आज भी प्रचलित है कि 'पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में माया' इसलिए दीपावली में सबसे पहले धनतेरस को महत्व दिया जाता है।जो भारतीय संस्कृति के हिसाब से बिल्कुल अनुकूल है।

शास्त्रों में वर्णित कथाओं के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन भगवान धनवंतरी अपने हाथों में अमृत कलश लेकर प्रकट हुए। मान्यता है कि भगवान धनवंतरी विष्णु के अंशावतार हैं। संसार में चिकित्सा विज्ञान के विस्तार और प्रसार के लिए ही भगवान विष्णु ने धनवंतरी का अवतार लिया था। भगवान धनवंतरी के प्रकट होने के उपलक्ष्य में ही धनतेरस का त्योहार मनाया जाता है।

इस दिन अपने घर की सफाई अवश्य करें।इस दिन अपने सामर्थ्य अनुसार किसी भी रूप में चांदी एवं अन्य धातु खरीदना अति शुभ है।धन संपत्ति की प्राप्ति हेतु कुबेर देवता के लिए घर के पूजा स्थल पर दीप दान करें एवं मृत्यु देवता यमराज के लिए मुख्य द्वार पर भी दीप दान करें।

समर्थ-2019 अभियान के तहत डाईट में आयोजित किया जागरूकता शिविर

नाहन (प्रे.वि). जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सिरमौर द्वारा 'समर्थ–2019' अभियान के अतंर्गत जिला प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान नाहन में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें प्रशिक्षुओं को आपदा के समय बचाव कार्यो के बारे जानकारी प्रदान की गई।

इस कार्यशाला का संचालन करते हुए जिला आपदा प्रबंधन समन्वयक डाईट नाहन ओमकार शर्मा ने बताया कि समर्थ–2019 अभियान के अतंर्गत जिला में 23 अक्तूबर, 2019 तक जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि आपदा से निपटने के लिए हर व्यक्ति को मानसिक तौर पर तैयार रहना चाहिए तभी आपदा से होने वाले जान–माल के नुकसान को कम किया जा सकता है।इस कार्यक्रम के दौरान गृह रक्षा विभाग की सदस्यों द्वारा आपदा के समय होने वाले बचाव कार्यो के बारे में प्रशिक्षुओं को मॉकड्रील के माध्यम से जानकारी दी उसके पश्चात अग्निशमक विभाग के कर्मचारियों द्वारा आग लगने के समय बचाव के उपायों तथा डॉ0 विनोद सांगल द्वारा प्राथमिक उपचार के बारे महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

हज के लिए कार्यक्रम घोषित

शिमला (प्रे.वि).भारत की हज कमेटी ने हज-1441 (एच)-2020 (सीई) के लिए कार्यक्रम की घोषणा की है। राज्य हज समिति को पूरा हज आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 10 नवंबर, 2019 निर्धारित की गई है। हज आवेदन हज समिति की वेबसाइट www-hajcommittee-gov-पद पर उपलब्ध है। प्रदेश सरकार के एक प्रवक्ता ने जानकरी दी कि आवश्यक दस्तावेजों के साथ पूरा आवेदन पत्र हिमाचल प्रदेश राज्य हज समिति के कार्यकारी अधिकारी के कार्यालय कमरा नम्बर 104, हिमाचल प्रदेश सचिवालय में 10-11-2019 तक कार्य समय के दौरान जमा हो जाने चाहिए। इस तिथि के बाद आवेदन फार्म को स्वीकार नहीं किया जाएगा।

कारावास के दिन सादे और अनुभव

पागलखाने की राह पर

शेरजंग

अनुवादक : निर्मला शेरजंग

प्रसिद्ध क्रांतिकारी व हिमाचल के शेर के नाम से विख्यात शेरजंग जो ज़िला सिरमौर से ताल्लुक रखते थे, इस महान् हस्ती ने सिरमौर का नाम पूरे देश में ऊँचा किया और यह परिवार आज भी उनके पौत्र मशहूर निशानेबाज समरेश जंग के रूप में सिरमौर का नाम पूरे विश्व में ऊँचा कर रहा है । उनके द्वारा अंग्रेजी में लिखित "ट्रिस्ट विथ टाईगर" नामक पुस्तक का हिन्दी में रूपान्तर "शेरों से मेरी मुलाक़ातें" तथा 'मैं घुम्मकड़ वनों का' उन्हीं की भार्या प्रख्यात शिक्षाविद् व लेखिका निर्मला शेरजंग द्वारा किया गया तथा 'हिमवन्ती' समाचार में क्रमवार छपे शेरजंग की इस विश्व प्रसिद्ध पुस्तक के अंशों को पाठक पढ़ भी चुके हैं ।

इसी श्रृंखला में एक अन्य पुस्तक 'कारावास के दिन' भी हम अपने पाठकों के सम्मूख प्रस्तुत करने जा रहे हैं । आशा है पाठकगण हमारे इस प्रयास की सराहना करेंगे और यह हमारी ओर से शेरजंग व उनकी पत्नी निर्मला शेरजंग को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी । **–सम्पादक**

इस जिंदा लाशों की दुनिया से दूर, मेरे घर के आसपास पक्षी अपने –अपने सुरीले गान गा रहे होंगे, धरती पर फूल–पल्लव अपनी–अपनी बहार दिखा रहे होंगे, हवा चारोंओर मीठी–मीठी सुगंध महका रही होगी और सब ओर उत्साह और उमंगों का वातावरण खिलखिला रहा होगा ।बच्चे और कुक्कर एक–दूसरे से खेलने, उछलते–कूदते शोरगुल मचा रहे होंगे, उनकी खुशी की मुखरित ध्वनि, पहाड़ों से टकराकर चारों ओर गूँज रही होगी। ये दिन फूलों के खिलने और तितलियों के नाचने के दिन हैं।इन दिनों नवयौवनाएँ, केशों में फूल सजाए, नदी–झरनों के तट पर उछलती, कूदती और गीत गाती हैं।

और इस पथरीली प्राचीरों और लोहे की सलाखों की दुनिया में –जहाँ न दिन का प्रकाश प्रवेश कर सकता है और न रात को सितारे झाँक सकते हैं–स्वप्नों और अभिलाषाओं को इस निर्दयता से कुचला जाता है कि वे विकसित होने से पहले ही दम तोड़ देते हैं। दंडद वार्ड जेल–जीवन का एक अटूट कुस्वप्न था: मृतक देह जैसी लोहे की ठंडी सलाखें मन को निर्जीव और शिथिल कर देती थीं और पत्थरों से बनी ऊँची–ऊँची दीवारों का बोझ आत्मा को कुचलता था।

मेरी छोटी सी कोठरी यानी कालकोठरी में ऐसा लगता था मानो समय शर्म, घबराहट और चिंता से घिरकर गतिविहीन हो गया था। –वह किसी अथाह दरार के किनारे पर अटका खड़ा था ।मेरी कालकोठरी भयहेतुक श्राप की तरह अँधेरी और कष्टकर थी ।मुलतान सेंट्रल जेल के इस भाग कोइ दंड वार्ड कहा जाता था ।दंड वार्ड के दो पक्ष थे–एक दूसरे के आमने–सामने। प्रत्येक वार्ड में पचास–पचास कोठरियाँ थीं।प्रत्येक कोठरी में अनाज पीसने की एक–एक चक्की थी। प्रत्येक कैदी के लिए, दैनिक श्रम के रूप में, अनाज पीसना अनिवार्य था।

मेरी कोठरी दंड वार्ड के आखिरी किनारे पर थी। इसके आगे एक ऊँची दीवार थी।दीवार में पहरेदारों के आने–जाने के लिए एक खिड़कीनुमा दरवाजा था जो सदा बंद रहता था ।इस प्रकार प्राचीरों से घिरा हमारा आँगन सारीद जेल से अलग हो जाता था। वह छोटा सा आँगन अत्यंत पीड़ाजनक था–सन्नाटे के रूदन में अकेलेपन से पीड़ित ।उसके संबंध में एक भद्दी धारणा थी–कहा जाता था कि जो भी कैदी वहाँ आता था, वह स्थिर बुद्धि नहीं रह पाता था; कुछ ही समय में प्रायः जल्दी ही, पागलखाने चला जाता था।

मुझे भी दंड के रूम में वहाँ भेजा गया था–मैंने जेल से भागने का प्रयास किया था जो विफल रहा ।यहाँ पर मुझे जो अनुभव हुआ वह आज पुनःस्मरण करने पर बहुत अटपटा और रम्य लगता है, परंतु उस समय वह वैसा नहीं था, बल्कि प्राण हरनेवाला था।

डंडों और बेंतों से पीटने के बाद जेल कर्मचारी मुझे यहाँ घसीट लाए थे। और यहाँ लाकर इस काल कोठरी में फेंक दिया था। गंदगी, अंधकार और कालिख में उस कोठरी का कोई मुकाबला नहीं था। वह चार कदम चौड़ी और छः कदम लंबी थी। वह कोठरी इतनी अँधेरी थी कि बाहर से आने पर मुझे वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा था। कुछ समय बाद जब आँखे अँधेरे की अभ्यस्त हो गई और उनमें देखने की क्षमता आई तो मैंने देखा कि उसमें एक मिट्टी के घड़े और दैनिक आवश्यकताओं को निभाने के लिए एक टीन के बरतन के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।ये दोनों चीज़ें जेल की हर काल कोठरी में होती हैं । कोठरी के बीच, तनिक बाई ओर , एक पक्की पटरी थी–दो फीट ऊँची, ढाई फीट चौड़ी और छः फीट लंबी। यह सोने के लिए थी, बिस्तर के रूप में उस पर एक पूरानी कचरा–चटाई थी और दो चिथड़े–से कंबल–जिन्हें कंबल कहना कंबलों का अपमान करना है।कोठरी की दीवारों पर बहुत सी अश्लील तसवीरें घसीट रखी थीं–कामातुर और कुंठित व्यक्तियों की अपनी रचनाएँ।

कोठरी मल–मुत्र की दुर्गंध से सड़ रही थी, ऐसा लगता था कि वर्षो से उसे साफ़ नहीं किया गया ।कच्चे फर्श और मिट्टी से लिपी दीवारों की घिसाई कितनी भी क्यों न की जाती, दुर्गंध जानेवाली नहीं थी। सारी कोठरी फर्श से छत तक–मच्छरों से भरी पड़ी थी, चटाई और कंबलों में पिस्सुओं और खटमलों की भरमार थी।

मेरी दोनों टाँगों में बेड़ियाँ बँधी थीं, लगभग तीन–तीन किलो की एक–एक बेड़ी ।इन्हें चौबीस घंटे पहने रहना पड़ता था और यह बहुत ही कष्टदायी था; तथापि परपीड़न में आनंद लेनेवाले अधिकारियों को उससे भी संतोष नहीं था। उन्होंने इन बेड़ियों के बीचद डेढ़ फीट की लोहे की छड़ लगा रखी थी जिससे दोनों टाँगों के बीच अंतर बना रहे। इस सारी व्यवस्था से चलना बहुत कठिन था। जेल अधिकारी चूँकि कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहते थे, इसलिए मुझे रात को हथकड़ियाँ पहना दी जाती थीं ।इस सारी यांत्रिक व्यवस्था के अतिरिक्त, रात के समय मेरी बेड़ियों के साथ एक लोहे की चेन लगा दी जाती थी–ठीक वैसी ही चेन जैसी जानवरों को बाँधने के लिए प्रयोग की जाती है।इस चेन को कोठरी के सलाखों में से निकलकर बाहर एक लोहे के खूँटे से बाँध दिया जाता था।'मैं कोठरी में ही हूँ और कोई गड़बड़ नहीं कर रहा', इसे निश्चित करने के लिए, पहरेदार उस चैन को हर दो घंटों के बाद खींचता था।

जेल से भाग निकलने का मेरा प्रयास विफल गया था, अपनी इस विफलताइ की मुझे कीमत चुकानी पड़ी। मुझे वे सब अपमान, कठिनाइयों और कष्ट सहने पड़े जो प्रयासों के विफल होने पर व्यक्ति को दिए जाते हैं।मेरे साथ जो व्यवहार किया गया उससे मेरी दशा बहुतइ बिगड़ गई थी। मेरे भोजन की मात्रा घटाकर आधी कर दी गई जिससे मेरा शारीरिक बल घटने लगा, उस पर मुझे मलेरिया हो गया जिसने मुझे और भी कमजो़र कर दिया।मैं प्रायः उदास और खिन्न पड़ा रहता था। बार–बार आत्महत्या करने का विचार मन में आता था, परंतु मैं उस विचार को मन में ठहरने नहीं देता था। 'मुझे अपने अत्याचारियों से अभी हिसाब चुकाना था, उससे बदला लेना था', यह विचार मुझे जीवित रहने के लिए प्रेरित करता था।मेरा मन और मस्तिष्क, दोनों एक ही लक्ष्य पर केंद्रित थे–'जेल तोड़कर कैसे भागा जाए।'

एक ओर जेल–अध्यक्ष की उपेक्षा थी और दूसरी ओर मेरे मन की बेचैनी –इन दोनों के कारण मेरा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं हो रहा था। थोड़े–थोड़े समय के बाद मुझे मलेरिया हो जाता और मेरे शरीर को झंझोड़ देता। भागने के प्रस्तावों के चिंतन में लगा मेरा मन मुझे बेचैन किए रहता था।कभी–कभी बुखार बहुत तेज़ हो जाता और मैं बड़बड़ाने लगता।पहरेदारों को आशंका होने लगी थी कि कहीं मैं मानसिक रूप से अस्थिर तो नहीं हो रहा।एक बार अनजाने में कुछ ऐसा ही हो गया जिसने उनकी आशंका को विश्वास में बदल दिया।

आधी रात का समय था, खूब अँधेरा था और मैं रात भर की अनिद्रा से पीड़ित था।तेज़ बुखार की बेचैनी से मैंद लगातार करवटें बदल रहा था।मेरे दाँत कटकटा रहे थे।बुखार इतना तेज़ था कि वह मेरी हड्डियों को झंझोड़ रहा था और मेरा सिर दर्द से फटा जा रहा था।ऐसी अवस्था में, कुछ आराम पाने के लिए मैं अपने घुटनों को ऊपर उठाकर छाती से लगाने की चेष्टा कर रहा था, किंतु बेड़ियों के कारण यह हो नहीं रहा था ।मुझे प्यास भी बहुत सता रही थी।मैं घड़े तक पहुँचना चाहता था, परंतु हथकड़ियों के कारण घड़े तक पहुँचना भी कठिन हो रहा था।अपने आपको आराम पहुँचाने की इन गतिविधियों में सोने की पटरी से नीचे घड़े पर आ गिरा। फर्श पर मैं अधोमुख टेढ़ा–मेढ़ा पड़ा था और घड़े का पानी मेरे शरीर के नीचे बह रहाद था। अपनी प्यास बुझाने के लिए मैंने कच्चे फर्श पर बहते गंदे पानी को चूसा और अपने आपको सँभालकर पटरी पर चढ़ने की चेष्टा करने लगा। मेरे नीचे गिरने के धमाके और चेन के खिंचाव से पहरेदार चौकन्ना हो गया था, उसने दरवाजे के छिद्र के ढक्कन को सरकाया और अंदर झाँकने लगा। मैं उस समय भी उठने की चेष्टा कर रहा था, परंतु बेड़ियाँ उलझी हुई थीं। चेष्टा करने पर भी मैं अपने घुटने मोड़ नहीं पाया और न ही ऊपर चढ़ने के लिए कोई सहारा मिला।हथकड़ियों से बँधे हाथ और भी बेकार थे।उस समय तक मैं इधर–उधर मुड़ता रहा, उठने की कोशिश करता रहा जब तक बिल्कुल थक नहीं गया।

मैं बहुत भद्दे रूप में गरूड़ की भाँति फैला हुआ अधोमुख फर्श पर पड़ा था; पीछे को मुड़ी हुई बाँहों को मैं इधर–उधर पटक रहा था, दोनों टाँगें एक –दूसरे से दूर सीधी पड़ी थीं, पिछला भाग कुबड़ा –सा होकर बेड़ियों के ऊपर छटपटा रहा था और फर्श पर पड़े अपने माथे को मैं बार–बार उठाता और गिराता था। फपर्श पर अधोमुख पड़ी मेरी वह आकृतिइ बहुत ही विचित्र और हास्यप्रद थी।

तब सहसा मेरे मन में एक तसवीर उमड़ी –मेढक की तसवीर; फैली हुई टाँगें, सिकुड़ी हुई बाँहें, थक फेंकता और हाँफता हुआ आधा खुला मुँह ।इस तसवीर के मन में आते ही मेरे हृदय में जोर से गुदगुदी हुई और मैं खुलकर हँस पड़ा–पतली, कठोर हँसी जो जाल में फँसे जानवर के चिल्लाने जैसी थी।वह उन्मत हँसी थी।जब मैं अपने आपको सँभालकर उठने में फूट पड़ती थी, पेट से उठकर वह मेरे शरीर को हिला देती थी। अंत में जब वह हँसी रूकी तो हाफ़िज़ के फारसी का एक पद्य मेरे मन में मुखरित हो उठा। उसके भावार्थ हैं।

''अँधेरे रात,
लहरों का डर और सामने भँवर,/
चिंतामुक्त तट पर बैठे मेरी दशा
को क्या जाने।''

पद्य की यह दो पंक्तियाँ, चमगादड़ की भाँति, मेरे मन में चक्कर लगाती रहीं–बार–बार और लगातार।इन पंक्तियों को मैं पहले धीमे से गुनगुनाने लगा और फिर ऊँचे स्वर में।उस समय जिस स्थिति में मैं था उसमें मेरा यह व्यवहार निस्संदेह विचित्र था–पहले हँसना, फिर गाना और यह सब अकेले बैठे और वह भी अकारण। इससे उस पहरेदार को धक्का अवश्य लगा होगा जो पहले से सावधान होकर मेरी ठिठोलियाँ देख रहा था। उसे विश्वास हो गया कि दंड वार्ड ने आखिर मुझे अपना शिकार बना हीइ लिया।

ड्यूटी बदलने के समय जब दूसरा पहरेदार आया तो पहले पहरेदार ने 'मेरे पागल हो जाने' के बारे में उसे सब कुछ बता दिया। उनके शब्दों में मेरे प्रति सहानुभूति अवश्य थी, किंतु अचंभा नहीं। ऐसा लगता था कि उन्होंने बहुत से स्वस्थ, सामान्य और पुष्ट कैदियों कोक उन काल कोठरियों में पागल होकर रोते, चिल्लाते या हँसते हुए देख रखा था।

ऐसी ही होती है माँ

एक दंपती दीपावली की खरीदारी करने को हड़बड़ी में था। पति ने पत्नी से कहा, 'जल्दी करो, मेरे पास टाईम नहीं है।' कह कर कमरे से बाहर निकल गया। तभी बाहर लन में बैठी माँ पर उसकी नजर पड़ी।

कुछ सोचते हुए वापस कमरे में आया और अपनी पत्नी से बोला, 'शालू, तुमने माँ से भी पूछा कि उनको दिवाली पर क्या चाहिए?

शालिनी बोली, 'नहीं पूछा। अब उनको इस उम्र में क्या चाहिए होगा यार, दो वक्त की रोटी और दो जोड़ी कपड़े....... इसमें पूछने वाली क्या बात है?

यह बात नहीं है शालू...... माँ पहली बार दिवाली पर हमारे घर में रुकी हुई है। वरना तो हर बार गाँव में ही रहती है। तो. .. औपचारिकता के लिए ही पूछ लेती।

अरे इतना ही माँ पर प्यार उमड़ रहा है तो खुद्द क्यों नहीं पूछ लेते? झल्लाकर चीखी थी शालू ...और कंधे पर हैंड बैग लटकाते हुए तेजी से बाहर निकल गयी।

सूरज माँ के पास जाकर बोला, 'माँ, हम लोग दिवाली की खरीदारी के लिए बाजार जा रहे हैं। आपको कुछ चाहिए तो. .माँ बीच में ही बोल पड़ी, 'मुझे कुछ नहीं चाहिए बेटा।'

सोच लो माँ, अगर कुछ चाहिये तो बता दीजिए.....

सूरज के बहुत जोर देने पर माँ बोली, 'ठीक है, तुम रुको, मैं लिख कर देती हूँ। तुम्हें और बहू को बहुत खरीदारी करनी है, कहीं भूल न जाओ।' कहकर सूरज की माँ अपने कमरे में चली गई। कुछ देर बाद बाहर आई और लिस्ट सूरज को थमा दी।......

सूरज ड्राइविंग सीट पर बैठते हुए बोला, 'देखा शालू, माँ को भी कुछ चाहिए था, पर बोल नहीं रही थीं। मेरे जिद करने पर लिस्ट बना कर दी है। इंसान जब तक जिंदा रहता है, रोटी और कपड़े के अलावा भी बहुत कुछ चाहिये होता है।'

अच्छा बाबा ठीक है, पर पहले मैं अपनी जरूरत का सारा सामान लूँगी। बाद में आप अपनी माँ की लिस्ट देखते रहना। कहकर शालिनी कार से बाहर निकल गयी।

पूरी खरीदारी करने के बाद शालिनी बोली, 'अब मैं बहुत थक गयी हूँ, मैं कार में A/C चालू करके बैठती हूँ, आप अपनी माँ का सामान देख लो।'

अरे शालू, तुम भी रुको, फिर साथ चलते हैं, मुझे भी जल्दी है।

देखता हूँ माँ ने इस दिवाली पर क्या मँगाया है? कहकर माँ की लिखी पर्ची जेब से निकालता है।

बाप रे! इतनी लंबी लिस्ट, ...पता नहीं क्या – क्या मँगाया होगा? जरूर अपने गाँव वाले छोटे बेटे के परिवार के लिए बहुत सारे सामान मँगाये होंगे। और बनो श्रवण कुमार, कहते हुए शालिनी गुस्से से सूरज की ओर देखने लगी।

पर ये क्या? सूरज की आँखों में आँसू........ और लिस्ट पकड़े हुए हाथ सूखे पत्ते की तरह हिल रहा था..... पूरा शरीर काँप रहा था।

शालिनी बहुत घबरा गयी। क्या हुआ, ऐसा क्या माँग लिया है तुम्हारी माँ ने? कहकर सूरज के हाथ से पर्ची झपट ली....

हैरान थी शालिनी भी। इतनी बड़ी पर्ची में बस चंद शब्द ही लिखे थे.....

पर्ची में लिखा था. 'बेटा सूरज मुझे दिवाली पर तो क्या किसी भी अवसर पर कुछ नहीं चाहिए। फिर भी तुम जिद कर रहे हो तो...... तुम्हारे शहर की किसी दुकान में अगर मिल जाए तो फुरसत के कुछ पल मेरे लिए लेते आना... . ढलती हुई साँझ हूँ अब मैं। सूरज, मुझे गहराते अँधियारे से डर लगने लगा है, बहुत डर लगता है। पल – पल मेरी तरफ बढ़ रही मौत को देखकर.... जानती हूँ टाला नहीं जा सकता, शाश्वत सत्य है..... पर अकेलेपन से बहुत घबराहट होती है सूरज।...... तो जब तक तुम्हारे घर पर हूँ, कुछ पल बैठा कर मेरे पास, कुछ देर के लिए ही सही बाँट लिया कर मेरे बुढ़ापे का अकेलापन।.... बिन दीप जलाए ही रौशन हो जाएगी मेरी जीवन की साँझ.... कितने साल हो गए बेटा तुझे स्पर्श नहीं किया। एक बार फिर से, आ मेरी गोद में सर रख और मैं ममता भरी हथेली से सहलाऊँ तेरे सर को। एक बार फिर से इतराए मेरा हृदय मेरे अपनों को करीब, बहुत करीब पा कर....और मुस्कुरा कर मिलूँ मौत के गले। क्या पता अगली दिवाली तक रहूँ ना रहूँ.....

पर्ची की आखिरी लाइन पढ़ते – पढ़ते शालिनी फफक–फफक कर रो पड़ी.....

ऐसी ही होती हैं माँ.

....

दोस्तो, अपने घर के उन विशाल हृदय वाले लोगों, जिनको आप बूढ़े और बुढ़िया की श्रेणी में रखते हैं, वे आपके जीवन के कल्पतरु हैं। उनका यथोचित आदर–सम्मान, सेवा–सुश्रुषा और देखभाल करें। यकीन मानिए, आपके भी बूढ़े होने के दिन नजदीक ही हैं।...उसकी तैयारी आज से ही कर लें। इसमें कोई शक नहीं, आपके अच्छे–बुरे कृत्य देर–सवेर आप ही के पास लौट कर आने हैं।।

CAN DIWALI SPARKLE WITHOUT CRACKERS

- Mannat Garg
G.N.M.P.School, Paonta Sahib

Diwali, the festival of joy and merry-making is around the corner and its time to start preparing for the revelry! Diwali for a lot of us can be summed up in 3 words: Party, Sweets and Crackers but I think that we can make it summed up by replacing one of those word s that is cracker and it can be said: party, sweet and donation- But the biggest thing for the young generation is to avoid crackers because from past many years they are making Diwali with crackers and off course it is very difficult to change the mind of the youngsters- The biggest question arised by the title of the topic "Can Diwali sparkle without crackers" I think yes, We can enjoy Diwali without fire crackers- Diwali is a festival of lights- People wait every eagerly for this special festival of Diwali and yes the time is in front of us- It is the most important and favorite festival of everyone, Specially for kids and children- We can spend this special time with family and friends then it is better than burning the crackers.

If we burn crackers there are so many noise and air pollution.

"It is Fun to burn crackers]but it is Sin to us only-"

It produces many many many gases like carbon monoÜide] Sulphur DioÜide] Nitrogen dioÜide] Nitrites and Nitrates and much more- Due to these there are so many diseases in the world-

Also we should don't have time to burn crackers because Diwali is a very busy festival as there is a lot to do in Diwali like Laxmi pooja, Foods, Sweets, etc ect.

The money we use on crackers is just wastage and is useless- We should learn that &&

"We are not burning crackers actually] we are burning the money itself."

So, Why shouldn't we use that money in something else- Something else which will help others and would give a gift of life whereas the money we use to buy crackers is just depressing other by giving them a gift of diseases like asthama, breathing problems and skin cancer- We should you some money to bring smile on unprivileged people's and children's faces- We can buy and give clothes] sweets and food to the needy person or give the money in Charity to the orphanage or NGO- That money can light up someone's house and can light up a whole village also- That money can solve the problem of water] of food and livelihood and shelter.

India is with population of 120 crore and if each person spent minimum 20 Rs- on crackers- Also a cracker produce 1 gram of hazardous gas and if we calculated then it will be 120 crore gram of hazardous gas which is too much- But what if this 120 crore population gives this 20 Rs- to the government then it will come out 24 billions Rs- which can be used in many works which can definitely help India to growth faster and faster and would help in development of smart India.

Before Diwali only people start to clean up their houses but in Diwali there is a lot to do from lighting of small diyas to big rangolis- The market has a large variety of Diyas available ranging from fancy designed to simple mud diyas- What we have to do to make Diwali eco&friendy is just to simply go to the market and buy some mud diyas rather than fancy designed diyas- Now we have to make the diyas the masterpiece with our own imagination and innovation and with just few colours- Also this would be a great use of time where a great wastage of time was being done by burning of crackers- After colouring the we should light each of them and make the Diwali brighter and brighter and brighter- Also to give our home a good look and to show our talent we can make rangoli which is a very great idea but that too should not be from the artificial colours but from natural colour being sold in the market or from those prepared by us in our home. As

"Burning crackers make the sky creative] but is destructive

Making rangoli make the house creative

And also attractive."

Parties are those things which goes hand to hand and Diwali is the best occasion to organise a party and to meet your near and dear] your friends] your relative, your classmates] your schoolmates, your teachers] the one who is very much far from you and those we haven*t seen for a while-

"Spending time with others creates a strong bonding whereas

burning crackers with each other creates pollution-"

So this Diwali I request all of you that instead of burning crackers you must invite your relative and near and dear and should celebrate diwali by 4 principals of celwbration: Wish] Eat] Dance, and Enjoy-

Also if you are a noise lover and wanted to celebrate diwali with noise only, then you must blow up some balloon fill in them some glitter papers and should burst them by sitting on them and this would be the great way of celebrating eco&friendly Diwali and can become the best also if you do this with your friends and relatives and near and dear-

Now I think celebration is alone with sweets\ Yes- We waste time in burning crackers and thus we have to seek markets to buy sweets which are not pure] they are impure, mixed with some impurities- So, we should make Sweets at our home only as it would be healthier and a good use of time that was wasted in burning crackers in the previous Diwali and also it is said that

"Edibles become more tastier,

when made by our loved ones-"

So ,Diwali is incomplete without sweets and nothing can be better than a bowl of rasmalai] jalebi] gulab jamun or kheer made by your loved ones,

So, in the nutshell we got that Diwali can be made eco&friendly and very interesting with some simple doings- We got about diverse ways in which we can celebrate Diwali without crackers- So] I wish that you must have read this carefully and would surely be going to implement these marvelous ways to make your this Diwali far better than your previous Diwali

Happy Smoke & free, Eco &friendly and Cracker&free Diwali to all the readers and the youth generation going to lead our future !!!!

जब सिंघा बजीर को भाया कोटी बूंच का ठंडा पानी

ट्रांसगिरी क्षेत्र अपनी अनूठी वीरगाथाओं के लिए जाना जाता है। यहां एक से बढकर एक वीर हुए जिनके साहस की कहानियां इतिहास में दर्ज है। आज हम आपको महाराजा सिरमौर के बजीर सिंघा औंजवाल के बारे में बताएंगे। सिंघा औंजवाल महाराजा सिरमौर का बजीर था ओर बहुत हि बलशाली और विद्वान माना जाता था उसकी इसी खूबी के कारण राजा ने उसे अपना बजीर बनाया था। वह मैला गांव जो कि पांवटा विधानसभा के आंजभोज क्षेत्र मे पड़ता है, का रहने वाला था। वह घोड़े की सवारी ओर अय्याशी करने का शौकीन था। क्षेत्र दौरे पर वह घुड़ सवार होकर ही जाता था। हर गांव में सिंघा बजीर के नाम की दहशत हुआ करती थी वह जिस गांव में जाता था वहां के नंबरदार को उसकी खातिरदारी करनी पड़ती थी। नंबरदार को एक सप्ताह पहले ही बजीर का हुकमनामा पंहुच जाता था जिसमे लिखा होता था स्वागत के लिए बकरा राशन और गीत गाने का इंतजाम किया जाए। जिसका सारा प्रबंध गांव के नंबरदार की जिम्मेवारी थी। अगर कोई नबरदार यह सब इंतजाम करने मे विफल रहता था उसे सिंघा बजीर के गुस्से का शिकार होना पड़ता था। सिरमौर रियासत का सारा लगान सिंघा बजीर एकत्रित करता था। सिंघा बजीर को कोटी बूंच गांव जो की सिरमौर का सबसे दूर का गांव माना जाता है का ठंडा पानी भा गया। कोटी बूंच गांव का पानी बान बुरास व देवदार के जंगल के बीच मे था जिसका बहुत महत्व बताया जाता था। सिंघा बजीर लगान एकत्रित करने के बहाने ठंडा पानी पीने कोटी बूंच जो कि नाहन से पैदल 200 किलोमीटर दूर था पंहुच गया। चूंकि यह रियासत काल की बात है उस समय सड़के नही हुआ करती थी तो लोग पैदल ही जाया करते थे। सिंघा बजीर को कोटी बूंच गांव जाना बहुत पसंद आ गया उसे लगा की एक बार वहां जरूर जाएगा। क्योंकि राजा का कोई बजीर उतने दूर नही जाता था तो सिंघा बजीर वहां पर पहला ओर आखिर बजीर था जो उस गांव मे गया था जहां पर सिंगटेऊ राजपूतो ने उसका वध कर दिया था। जाने से पहले सिंघा बजीर ने अपनी पुरी तैयारी कर ली उसका सामान उठाने वाले ज्यादातर दलित हुआ करते थे जिनका काम एक गांव से दूसरे गांव तक उसका सामान (बेगारी) ले जाना था। सिंघा बजीर टौंरू होते हुए भरली गांव पंहुचा ओर उनसे दुगाना जाने का रास्ता पूछा। भरली गांव के लोगो ने बताया की निगाली होकर सबसे नजदीक रास्ता है। जब सिंघा बजीर निगाली पंहुचा तो सामने दुगाना गांव ओर साथ लगती जमीन देखकर वह बहुत खुश हुआ। उसने निश्चय किया की आज की रात दुगाना गांव मे ही गुजारेगे। उस समय दुगाना गांव का नंबरदार बलिया दुगाणुआ होता था। जब उसका काफिला दुगाना पंहुचा तो उसने बलिया नंबरदार को हुकम दिया की हमें रात को खाने पीने का राशन ओर घोडे के लिए घास का इंतजाम किया जाए। दुगाना के नंबरदार जो की बहुत ही बुद्धिमान होते थे ने सिंघा बजीर का जो स्वागत किया उससे वह खुश हो गया। नंबरदार ने पुरी रात उसे बातो मे ही उलझाकर रख दिया अगली सुबह उसने नंबरदार से कहा की अपने चार आदमी मेरी बेगारी (सामान) उठाने के लिए दे दो तब बलिया नंबरदार ने झड़वाण बिरादरी के चार लोगो को सिंघाराम का सामान उठाने के लिए भेज दिया। वह लोग उसका सामान मिल्ला गांव तक छोड आऐ थे। मिल्ला मे उस समय अफीम की खेती होती थी, मिल्ला ही नही रियासत काल मे समस्त गिरीपार क्षेत्र मे अफीम उगाई जाती थी। आजादी के बाद उसे बेन कर दिया गया था जो आज तक जारी है। जब सिंघाराम मिल्ला पंहुचा वहां की महिलाएं अफीम के दाने कूट रही थी, गौर हो अफीम के दानो से बेडेली (परांठ जिसमे आलु के बदले अफीम का पेस्ट भरा जाता है) की रोटी बनाई जाती थी। सिंघा बजीर ने हुकम दिया कि उनको अफीम की रोटी खिलाओ उसे ठंडा पानी पीने कोटी बूंच जाना है जहां का सफर बहुत ही ज्यादा है। महिलाओ ने कहा की आप यहीं ठंडा पानी पी लो लेकिन सिंगा बजीर नही माना उसने अफीम खाकर अपनी यात्रा शुरु की ओर शाम को रास्त गांव जो की रोनहाट के पास है,पंहुच गया। सिंघा बजीर के दिमाग मे डर नाम की कोई चीज नही होती थी वह चांदपुरधार जहां पर घना जंगल था ओर रीछ बाघ का डर होता था के रास्ते भंगाल खडड होते हुए रात को कोटी बूंच गांव पंहुच गया। उस समय कोटी बूंच गांव का नंबरदार आरशू सिंगटोऊ हुआ करता था। सिंघा बजीर ने उसे राम सलाम की तब आरशू ने पूछा हमारे यहां कैसे आना हुआ। आज तक कोई बजीर यहां नही आया आप कैसे आऐ तब सिंघा बजीर ने कहा यहां आने का मुझे कोई डर नही है। कोटी बूंच भी सिरमौर रियासत का ही हिस्सा है जो मेरे अपने घर की तरह ही है। थक कर सिंघा बजीर ने नंबरदार को कोटी बूंच का ठंडा पानी पिलाने का हुकम दिया ओर घोड़े के लिए चारा मंगवाया। सिंगटोऊ राजपूतो ने सिंघा बजीर को राशन देने से इनकार कर दिया ओर कहा की अपना राशन खाओ। वहां के नंबरदार आरशू जो की बहुत ही नीडर था ने उसे दूर के एक मकान मे ठहरा दिया। सिंघा बजीर ने आरशु नंबरदार से एक ऐसी अनेतिक मांग कर डाली जिसे मानना आरशु के लिए संभव नही गरिमामयपूर्ण था। आरशु नंबरदार बहुत ही दबंग ओर चतुर था उसने रातो रात जुब्बल से खग (जल्लाद) मंगवा लिए खग जब कोटी बूंच पंहुचे तो उन्होने सिंघा बजीर के ठहरने का ठिकाना पूछा ओर वहां जाकर सिंघा के बेटे दीना को पकड़कर वध कर दिया। उसके बाद खगो ने सिंघा बजीर का भी वध कर दिया।

बाइक बोट का फर्जीवाड़ा

71 लोगों ने की कंपनी पर धोखाधड़ी के आरोप

पांवटा (ब्यूरो)। गर्वित इन्नोवेटिव प्रमोटर्स लिमिटेड, गौतम बुद्ध नगर, दादरी की बाइक बोट कंपनी द्वारा देशभर सहित हिमाचल प्रदेश के पांवटा साहिब से सैकड़ों निवेशकों के करोड़ों रुपए हड़पने का मामला सामने आया हैं। देशभर के भोले–भाले निवेशकों को ठगने के लिए जहाँ समय–समय पर कई फर्जी कंपनियां आती जाती रहती हैं। ऐसी ही एक बाईक बोट कंपनी की स्थापना कर एक ऐसी योजना बनाई जिसके तहत कम्पनी ने ग्राहकों को प्रलोभन दिया कि ग्राहक द्वारा जमा राशि पर दोगुनी राशि इस बैंक द्वारा ग्राहक को दी जायेगीं जिसे इश्तिहार व मल्टी मीडिया के माध्यम से बाईक बोट टैक्सी नामक ऐप गुग्गल प्ले स्टोर के तहत लाँच किया तथा वैबसाईट भी जारी की। पांवटा साहिब के सैकड़ों स्थानीय निवेशक इस कम्पनी के झांसे में आ गए और अपनी करोड़ों रुपये की राशि बिना सोचे समझे इस बैंक में जमा करा दी। अब निराश व मायूस होकर लगभग 71 से अधिक लोगों ने प्रदेश के पुलिस उच्च अधिकारियों को विगत दिनों लिखित शिकायत भेजकर इस कम्पनी के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज करा तुरंत कड़ी कार्यवाही करने का अनुरोध किया है। इस कंपनी के ठगने का तरीका एकदम नया व सुनियोजित था। महज 61200 निवेशक से लेकर उसकी बाइक को टैक्सी के तौर पर महानगरों में चलाए जाने तथा 1 वर्ष में पैसा दोगुना करने का प्रलोभन व प्रपंच रचा गया। देशभर में एनसीआर समेत कई शहरों में यह सेवा लांच भी कर दी गई व मोबाइल एप के द्वारा ग्राहकों को मोबाइल टैक्सी सेवा भी दी गई। लाखों निवेशकों को इस में पैसा लगाने के लिए कई तरीकों से आमंत्रित किया गया।

पाँवटा साहिब के सबसे पुराने एंव अनुभवी वैद्य

स्थापित 1935

84 वर्षों से प्रसिद्ध

बवासीर फीशर रोग से छुटकारा पायें
आप्रेशन के भारी खर्च व पीड़ा से बचें

पुरानी कब्ज के भयंकर परिणाम बवासीर (PILES)

★ गुदा के मस्सों में जोरों का दर्द होना ★ गुदा के मस्सों में भयानक खारिश व जलन
★ गुदा के मस्सों से खून बहना ★ दवाई का 'असर' पहले दिन से

वैद्य जी. एस. अरोड़ा
आयुर्वेदिक यूनानी प्राकृतिक (परामर्श चिकित्सक)

पत्थरी (गुर्दा, मूत्राशय, पित्ते) | गठिया (रीहदर्द) | एग्जीमा (चम्बल) | स्त्री–पुरुष गुप्त रोग | निःसंतान दम्पति

हीरा आयुर्वेदिक दवाखाना®

पता : (बस स्टैण्ड से विश्वकर्मा मन्दिर के बीच) नगर पालिका शॉपिंग काम्पलैक्स, शॉप न.3 पाँवटा साहिब सम्पर्क करें 09418266155, 08219836938

धर्मशाला दूसरी राजधानी है,सत्ता में लौटते ही उठाएंगे व्यापक कदमः मुकेश

धर्मशाला (प्रे.वि)– उपचुनाव के बीच नेता प्रतिपक्ष मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि बीजेपी निचले इलाकों से भेदभाव कर रही है। निचले इलाकों में विकास से बीजेपी ने हाथ झाड़ दिए हैं। धर्मशाला दूसरी राजधानी है इसे कांग्रेस शासनकाल में तत्कालीन सीएम वीरभद्र सिंह ने अधिसूचित किया था, जब भी कांग्रेस सत्ता में आएगी इसे लेकर व्यापक कदम उठाए जाएंगे। बीजेपी नेताओं का कहना है कि धर्मशाला में दूसरा राजधानी के लिए इंफ्रास्टक्चर नहीं है, जबकि यह कहना गलत है। यहां पर शिमला की ही तरह विधानसभा का शीतकालीन सत्र चलता है। बीजेपी तो तपोवन स्थित विधानसभा परिसर को अन्य कार्य के लिए उपयोग करना चाहती है। मुकेश ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि धर्मशाला अगर दूसरी राजधानी रहती है तो इसका लाभ कर्मचारियों को भी होगा।

मुकेश ने कहा कि कांग्रेस का धर्मशाला से भावनात्मक रिश्ता है। धर्मशाला व शिमला दोनों स्थानों पर स्मार्ट सिटी बन रही है। जबकि सरकार ने इसके लिए मिलने वाली फंडिग रोक रखी है। अब सरकार 50–50 की बात कर रही है। कांग्रेस के सत्ता में आने पर धर्मशाला में भी वहीं वेतन व भत्ते देय होंगे जो शिमला में है। मुकेश ने कहा कि बीजेपी ने प्रशासनिक ट्रिब्यूनल भंग करके कर्मचारियों से अन्याय किया है। जो मामले ट्रिब्यूनल में हल होते थे वे हाइकोर्ट पहुंच गए हैं। मुकेश ने कहा कि बीजेपी सरकार में पिछले दिन पत्र बम खूब चला लेकिन उसकी जांच का स्टेटस क्या है। यह बात जनता जानना चाहती है। गत दिवस पैसे बांटने का जो मामला सामने आया उसे देखते हुए हेल्थ मिनिस्टर पर प्रचार से रोक लगनी चाहिए। सुजानपुर से विधायक राजेंद्र राणा ने कहा कि सरकार अधिकारियों के दम पर चुनाव जीतना चाहता है। पत्र बम में जो भी भ्रष्टाचार की बातें लिखी गई थी उनका क्या हुआ। यह जांच का विषय है।

'जय जवान–जय किसान' के नारे को सच कर दिखाया किसान जीत सिंह ने

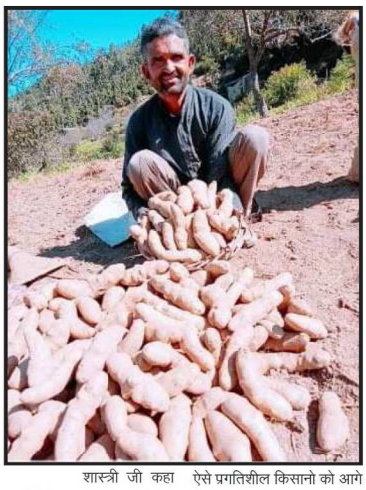

शास्त्री जी कहा करते थे जय जवान जय किसान उनकी इस कहावत को चरितार्थ करते हुए सिरमौर जिला की सागना सताहन पंचायत के किसान जीत सिहं ने यह कर दिखाया है। इस किसान ने 9 इंच का लंबा आलु उगाया है जो अन्य किसानो के लिए बानगी है। आजकल लोग जीत सिहं के आलु की तारीफ करते नही थकते। जीत सिहं ने बताया कि उनको घर पर ही आलु के अर्डर आ रहे है। सरकार को ऐसे प्रगतिशील किसानो को आगे लाकर प्रोत्साहित करना चहिए। ताकी उनसे सीखकर अन्य किसान उनके नक्शे कदम पर चले। अगर किसान मजबूत होगा तो देश समृद्धशाली बनेगा। लेकिन सरकार का किसानो की तरफ कम ही ध्यान जाता है। किसान हमारे देश का अन्नदाता है जो सबको खाना खिला रहा है लेकिन आज हमारा यह अन्नदाता खुद को उपेक्षित महसूस कर रहा है। सरकार चाहे कोई भी आए किसानो

– सुन्दर चौहान की विशेष रपट

के लिए उसके पास कोई नीती नही है। किसान अगर ज्यादा फसल उगाता है तो भाव कम हो जाते है और कम उगाता है तो उसकी फसल का फायदा बिचौलिए उठा लेते है। मोदी सरकार ने 2014 मे जस्टिस स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशे लागू करने को कहा था,उसके तहत किसानो को उनकी लागत का दोगोना दाम मिलना था लेकिन उस पर आज तक अमल नही हो पाया। प्रदेश मे भी सरकार किसानो के लिए कुछ खास नही कर पा रही है। यहां पर बड़ी मंडियो की व्यवस्था न होने के कारण किसानो को अपनी फसले बाहरी राज्य मे ले जाकर बैचनी पड़ रही है।

भारत के विकास मे कांग्रेस सरकार की उत्कर्ष उपलब्धियों का दर्पण।

– सुरेन्द्र कपिल

बोकारो इस्पात संयंत्र–यह इस्पात कारखाना झारखन्ड के बोकारो नगर मे स्थित है जो भारत की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी के प्रयास स्वरूप सोवियत संघ के सहयोग से बनाया गया इसका निर्माण कार्य 6 अप्रैल 1968 मे प्रारम्भ हुआ।

यह इस्पात कारखाना भारत के प्रथम स्वदेशी इस्पात कारखाने के रूप मे भी जाना जाता है। इसके अधिकतर उपकरण व साज– समान तथा तकनीक कौशल स्वदेशी है।

इसका प्रथम चरण 2 अक्तूबर 1972 मे पहली धमन भट्टी चालू होने के साथ शुरू हुआ जो 17 लाख टन इस्पात पिन्ड की क्षमता का था। इसके पश्चात् समय –समय पर इसकी क्षमता बढाई गई।

1990 के दशक मे इस कारखाने का आधुनिकीकरण करने से इसकी क्षमता बढ कर 45 लाख टन तरल इस्पात हो गई।

वर्तमान भारत के निर्माण मे इस कारखाने का महत्वपुर्ण योगदान है। यह है भारत की विकास यात्रा मे कांग्रेस सरकार की ठोस नीति का परिणाम। **वन्देमातरम।**

स्वतन्त्रता सैनानी का मनाया गया जन्म दिवस

पांवटा साहिब (प्रे.वि)– पांवटा साहिब हिमाचल प्रदेश के प्रमुख स्वतन्त्रता सैनानी पंडित शिवानदं रमौल का 125वां जन्मदिन मनाया गया। उनके नाम परस्थापित किए गए पंडित शिवानद रमौल ओद्यौगिक संस्थान पांवटा साहिब में आयोजित एक कार्यक्रम में, संस्थान के उपाध्यक्ष अमित रमौल व अन्यस्टॉफ सदस्यों तथा गणमान्य पड़ौसी व्यक्तियों ने स्वर्गीय रमौल के चित्र पर उन्हें श्रद्धाजंलि भेंट की। शिवानद का जन्म1894 में आज के दिन फतेह सिंह के घर ग्राम खैना, भरोग–उचयबनेड़ी तहसील पांवटा साहिब में हुआ था। शमशेर हाई स्कूल नाहन से दसवीं कक्षा पास करने के उपरान्त उन्होने रियासत सिरमौर में 1916 से 1921 तक सहायक जेलर के रूप में नौकरी की, जो उन्हें रास नही आई। देहरादून, इलाहावाद आदि स्थानों पर स्वतन्त्रता संग्राम में काम करते हुए वे दिल्ली पहुंच गए। उन्होने कुछ समय के लिए दिल्ली को अपनी कर्मस्थली बनाया जहां उन्हाने 1939 से 1941 तक सेवा संघ के सचिव के रूप में काम किया। 1939 से 1941 तक सिरमौर प्रजामंडल के सचिव रहे उन्हें सितम्बर1947 से दिसम्बर 1947 तक डिफैन्स ऑफ सिरमौर एक्ट के अन्तर्गत नजरबंद भी किया गया।

स्वर्गीय रमौल ने सुक्ेत सत्याग्रह का नेतृत्व भी किया तथा उस समय की रियासत सुक्ेत को राजाओं के शासन से मुक्त कर प्रांतीय सरकार के अध्यक्ष बने। कांग्रेस पार्टी में काम करते हुए 1948 से 1952 तक सिरमौर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। 1952 से 1956 तक प्रदेश कांग्रेस के महासविच तथा 1956 से 1959 तक कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष का पद सभंला। स्वर्गीय रमौल ने हिमाचल प्रदेश की पहली विधानसभा के लिए 1952 में चुनाव लड़ा व पांवटा विधानसभा क्षेत्र के प्रथम विधायक बने।

होम्योपैथिक डॉ. नागिया द्वारा डेंगू और "लो प्लेटलेट्स" के मरीजों का सफल इलाज

पांवटा (हिका). पांवटा साहिब के वाई प्वाईट पर स्थित लाइफ लाइन होम्योपैथिक नामक क्लीनिक में डेंगू के मरीजों का सफल इलाज किया जा रहा है। जिसमें मात्र14 हजार "लो प्लेटलेट्स" का सफल इलाज में करने में इस क्लीनिक के डॉ. रोहताश नागियां ने सफलता हासिल कर कई बड़े डाक्टर्स को अचम्भित किया गया है।

लाइफ लाइन क्लीनिक के एमडी डॉक्टर रोहताश नागिया ने बताया कि पिछले दो माह से डेंगू और लो प्लेटलेट्स को लेकर पांवटा साहिब के सैंकड़ों लोग बाहरी राज्यों के बड़े निजी अस्पतालों में हजारों रूपये खर्च कर अपना इलाज करवा रहे हैं। जबकि होम्योपैथिक "लाइफ लाइन क्लीनि" में इसका इलाज सफलतापूर्वक किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि पिछले 2 माह में 100 से अधिक डेंगू और लो प्लेटलेट्स पेशेंट का क्लीनिक में सफल इलाज किया गया है। इतना ही नहीं एक अंगपाल नामक मरीज के मुताबिक लाईफ लाइन होम्योपैथिक क्लीनिक से 14000 प्लेटलेट्स के साथ ट्रीटमेंट 18 सितम्बर को शुरू किया और 21 तारीख तक अंग पाल पूरी तरह से लो प्लेटलेट्स रिकवर कर अपने घर जा चुका था। इस मरीज ने बताया कि उसे पांवटा के एक निजी बड़े अस्पताल ने रैफर कर दिया था जिसके बाद उन्होंने लाइफ लाइन होम्योपैथिक क्लीनिक पर इलाज शुरू करवाया जहां उनके 24 घंटे में प्लेटलेट्स बढ़े और 3 से 4 दिनों में लो प्लेटलेट से रिकवरी हुई।

डॉक्टर रोहताश नागिया ने बताया कि उनके पास इस वर्ष डेंगू और लो प्लेटलेट्स के 100 से अधिक मामले आए हैं। और लगभग सभी मामलों में उन्होंने सफलतापूर्वक लोगों का इलाज किया है। उन्होंने कहा कि लो प्लेटलेट्स या डेंगू में घबराए नहीं बल्कि समय पर पहुंचकर डॉक्टर से इलाज करवाएं।

बता दें कि होम्योपैथिक के बेहतरीन रिजल्ट को देखते हुए हिमाचल प्रदेश में भी आने वाले समय में आयुर्वेद की तर्ज पर होम्योपैथिक इलाज की डिस्पेंसरी और अस्पताल खोले जा सकते। होम्योपैथिक इलाज पद्धति कई हजार साल पुरानी बताई जाती है इसमें शल्य चिकित्सा के साथ–साथ किसी भी रोग को जड़ से समाप्त किया जा सकता है।

दून प्रेस क्लब के उपाध्यक्ष हरबख्श सिंह व सचिव नरेंद्र सैनी बने

पांवटा (सुन्दर) दून प्रेस क्लब की बैठक अध्यक्ष श्यामलाल पुंडीर की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस बैठक में क्लब की कार्यकारिणी का विस्तार किया गया। उपस्थित क्लब के सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से क्लब के वरिष्ठ सदस्य सरदार हरबख्श सिंह को उपाध्यक्ष व नरेंद्र सैनी को सचिव चुना है। इसके अलावा इस बैठक में आगामी 14 नवबंर को बाल दिवस के मौके पर स्कूल में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन करने का निर्णय लिया गया है। इस कार्यक्रम के प्रभारी नरेंद्र सैनी व दिनेश पुंडीर को बनाया गया है। इसकी तैयारियों के लिए एक नवंबर को फिर से बैठक आयोजित होगी। जिसमें कार्यक्रम की रूपरेखा व मुख्य अतिथि के बारें चर्चा होगी। नवबंर के बाद फरवरी महीने में एक और कार्यक्रम का आयोजन होगा। जबकि मुख्य कार्यक्रम 3 मई विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर होगा। इस बैठक में चेयरमेन दिनेश ठाकुर, उपाध्यक्ष हरबख्श सिंह, सचिव नरेंद्र सैनी, उपाध्यक्ष दिनेश पुंडीर, उपाध्यक्ष मुकेश कुमार, कोषाध्यक्ष डां प्रखर गुप्ता, रोबिन शर्मा, नरेश पाबूच, सचिन ओबराय, सुंदर सिंह, गुरविद्र कुमार आदि क्लब के सदस्य व पदाधिकारी उपस्थित थे।

आखिरकार 14 दिनों बाद एनएच 707 हुआ बहाल

पांवटा (सुन्दर चौहान) 14 दिन की कडी मेहनत के बाद आखिरकार सोमबार देर शाम को लालढांग रोहड़ू एन एच 707 बहाल हो गया। विभाग ने देर शाम को सड़क को वाहनो के लिए खोल दिया है। जिसके बाद प्रशासन ने राहत की सांस ली है। अगर यह सड़क सोमबार को बहाल न होती तो सरकार व स्थानिय प्रशासन के खिलाफ धरना प्रर्दशन हो सकता था जिससे उनकी किरकिरी हो सकती थी। लेकिन विभाग सड़क खोलने मे कामयाब रहा। सडक खुलते ही गिरीपार क्षेत्र एक बार दोबारा से जिले के साथ जुड़ गया। गौर हो सतौन के समीप लालढांग रोहडू एन एच का बहुत बड़ा भूभाग दरक जाने से सड़क का नामो निशान मिट गया था जिसके चलते गिरीपार क्षेत्र का संपर्क अन्य हिस्से से कट गया था। जिसे देर शाम दोबारा जोड़ दिया गया है।

बैंकों की मनमानी से दुःखी पीड़ित ने वित्त राज्य मंत्री अनुराग को भेजी शिकायत

बद्दी (गौतम). एक तरफ तो केंद्र सरकार बैंकिग सैक्टर का सरलीकरण करके हर आम व्यक्ति तक बैंक की योजनाओं को पहुंचाने का दावा करती है वहीं दूसरी ओर बैंकों में आम लोगों के प्रति अशोभनीय व्यवहार के मामले आम होते जा रहे हैं। बैंक अधिकारी बैंकों में आम जन के प्रति ऐसा व्यवहार करते हैं मानो बैंक संस्थान सरकार का न होकर उनके घर का हो। बद्दी के हाऊसिंग बोर्ड निवासी विनोद शर्मा पुत्र कृष्ण कुमार शर्मा ने बताया कि शुक्रवार को वह गृह निर्माण कार्य के लिए ऋण लेने के लिए पंजाब नेशनल बैंक बददी ब्रांच गए थे । वहां पर उपस्थित ब्रांच मैनेजर ने उसके लोन के आवेदन को देखा तक नहीं और फाईल को रिजेक्ट कर दिया। मैनेजर ने कहा कि आपका सेविंग खाता तो यहां पर है लेकिन आपका सैलरी अकाऊंट यहां नही है इसलिए हम लोन नहीं दे सकते। विनोद शर्मा ने कहा कि उसके पास मकान की 31 लाख रुपये की रजिस्ट्री है और उसको आड़ रखकर आप होम लोन दे दें। क्योंकि उसका मकान बहुत पुराना व जर्जर है और उसको वह दोबारा बनाना चाहता हैं जबकि वर्तमान में उसके प्लाट का बाजारी मूल्य 50 लाख रुपये है। उसके बाद उसने कहा कि आप मेरे आवेदन पर लिख दो कि मुझे आप लोन नहीं दे सकते तो मैनेजर ने कहा कि हम जुबानी बताते हैं लिखकर नहीं दे सकते। जब पीड़ित ने ज्यादा जोर देकर कहा तो बैंक वालों ने पुलिस थाने फोन करके पुलिस को बुला लिया। पुलिस ने भी उपभोक्ता का पक्ष लिया और कहा कि वह बिल्कुल ठीक कह रहा है। गलती बैंक की है इसलिए बैंक लिखकर दे कि आप लोन क्यों नहीं दे सकते। इसमें पुलिस की उपस्थिति में उन्होंने आवेदन पर लिखकर दे दिया कि कि हम आपको कुछ कारणों से लोन नहीं सकते। एक तरफ तो मोदी सरकार मुद्रा समेत अन्य लोन युवाओं को शीघ्र देने का दावा करती है और अगर कोई युवा रजिस्ट्री रखकर लोन मांगता है तो पुलिस बुलाकर उसको डराया जाता है। उन्होने कहा कि यह हिमाचल प्रदेश का पहला मामला है जिसमें पात्र व्यक्ति को लोन देने की बजाय पुलिस बुलाकर डराया धमकाया जाता है जो कि निंदनीय है। इस विषय में पीड़ित उपभोक्ता विनोद शर्मा ने कहा कि उसने अपने साथ हुए दुर्व्यवहार की शिकायत बैंकिंग लोकपाल सहित देश के वित्त राज्य मंत्री अनुराग ठाकुर को भेजी है और न्याय की गुहार लगाई है। पीड़ित ने कहा कि अगर मेरे साथ इंसाफ नहीं हुआ तो हम पंजाब नेशनल बैंक बददी के बाहर धरना देने को मजबूर हो जाएंगे। उन्होने बैंक के स्टाफ को बदलने की मांग भी उठाई।

चर्चित चेहरा

प्रशासनिक दक्षता के साथ-साथ साहित्य प्रेमी एवं शिक्षाविद भी हैं

प्रभात शर्मा 'प्रभात'

-रमेश मस्ताना

चम्बा जनपद में छतराड़ी क्षेत्र में दूर दराज के परगना पीयूरा के गांव गीयूंरा के एक लब्ध प्रतिष्ठित परिवार में माता बन्तो देवी और पिता सफरी राम शर्मा के घर पर 29 जून 1954 को जन्मे प्रभात शर्मा अपनी मेहनत एवं असाधारण प्रतिभा के बल पर न केवल प्रशासनिक सेवा के सर्वोच्च पदों पर ही कार्यरत रहे अपितु अपने सरकारी व्यवसाय के अन्तिम चरण में हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के सचिव पद से सेवानिवृत्त भी हुए। इनके पूर्वजों का संबंध जहां दुर्गम व दूर दराज के छतराड़ी क्षेत्र से था, वहां इनके पिता ने कांगड़ा जिला के जोल -छतड़ी में भी अपना स्थाई आवास बनाया,इसलिए प्रभात शर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा छतड़ी-सिहुंआं, तदुपरांत मैट्रिक तक शाहपुर विद्यालय में और फिर संस्कृत विषय में ऑनर के साथ प्रवीण स्नातक की उपाधि हिमाचल प्रदेश विश्व विद्यालय के अन्तर्गत राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला से इन्होंने प्राप्त की। स्नातक बनने के बाद कुछ समय तक एक निजी विद्यालय में संस्कृत-अध्यापक के रूप में भी इन्होंने कार्य किया। इसके उपरांत सितंबर 1976 में वन -रक्षक के रूप में तथा जून 1977 में राजस्व विभाग में बतौर कानूनगो नियुक्ति होने पर इनके जीवन की दशा और दिशा दोनों बदले और यह पूर्ण रूप से राजस्व एवं भू-व्यवस्था से जुड़ते चले गए। कानूनगो के रूप में नियुक्ति के बाद भू-व्यवस्था एवं मुहाल का प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत खुंडियां तथा धौलाधार प्रोजेक्ट पालमपुर में भी अपनी सेवाएं प्रदान कीं। तत्पश्चात नायब तहसीलदार के रूप में उपायुक्त कार्यालय कांगड़ा के साथ -साथ एन एच पीसी बनीखेत, मंडलायुक्त कार्यालय धर्मशाला तथा चम्बा की पांगी-घाटी में सेवाएं प्रदान करने के पश्चात जब तहसीलदार के रूप में पदोन्नति हुई तो सर्वप्रथम मन्दिर अधिकारी, चिन्तपूर्णी और फिर भटियात, सुन्दर नगर, पांगी-घाटी, हमीरपुर और मंडी आदि में कार्य करने के उपरांत हिमाचल प्रदेश प्रशासनिक सेवा में आने पर ए सी टू डी सी बिलासपुर, मंडी तथा उप मंडल अधिकारी (ना.) पांगी - किलाड़ में कार्य करते हुए सन् 2008 में हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला में सचिव पद पर जून 2012 तक अपनी सेवाएं प्रदान कीं। अपने व्यवसाय के मध्य वर्ष 1997 में इन्होंने पांगी-घाटी में बतौर तहसीलदार अपनी सेवाएं देते हुए न केवल उप मंडल अधिकारी (ना.) के रूप में ही अपनी सेवाएं दीं अपितु आवासीय आयुक्त के रूप में भी इकहरी प्रशासनिक प्रणाली के अन्तर्गत समस्त सरकारी विभागों के उत्तरदायित्व को सफलता पूर्वक निभाने का सराहनीय प्रयास भी किया। सचिव, स्कूल शिक्षा बोर्ड रहते हुए भी इन्होंने जहां शिक्षकों, शिक्षार्थियों एवं बोर्ड - कर्मचारियों के हित में कई प्रशासकीय कदम उठाए, वहां स्टेट ओपन स्कूल की अवधारणा को सफल बनाते हुए बोर्ड के समस्त कार्यों का कम्प्यूटरीकरण करने के लिए लगभग पांच करोड़ के बजट का प्रावधान करते हुए सूचना प्रौद्योगिकी को सुदृढ़ करने का प्रयास भी किया। बोर्ड कर्मचारियों के हितों को सुरक्षित करने के लिए चार ट्रस्टों की भी स्थापना की, जिनमें पैन्शन कोश ट्रस्ट अति महत्वपूर्ण निर्णय था, जिसमें दस लाख की राशि संचित करके उसका शुभारंभ किया इन्होंने ही किया।इसी के साथ-साथ एक बहुत बड़े परीक्षा एवं नकली प्रमाण पत्र फर्जीवाड़े का पर्दाफाश करते हुए, उसके विरुद्ध एफ आई आर भी दर्ज करवाने की हिम्मत इन्होंने ही की थी।

अपने जीवन के समस्त प्रशासकीय अनुभवों को यह महत्वपूर्ण तो मानते ही हैं परंतु पांगी-घाटी के विभिन्न चरणों के लगभग दस वर्षों के कार्यकाल को यह बहुत अधिक अविस्मरणीय मानते हैं। एक कुशल प्रशासक के रूप में इनका हर संभव प्रयास रहा कि यह कार्यालय में बैठकर काम करने के साथ-साथ समय-समय पर दूर दराज बसे लोगों, विशेषकर बुजुर्गों के बीच स्वयं जाकर उनके दुःख-दर्द को साझा करके लोक-कल्याण की भावना रखते हुए सरकारी सहायता तक पहुंचाने का प्रयास भी करते रहे हैं। पांगी-घाटी में लोगों की समस्याओं को समझने के लिए इन्होंने पंगवाली एवं भोटी भाषा को भी सीखा और पंगवालों एवं भोटों की भावनाओं को समझते हुए, उनके घर-द्वार पर जाकर उनकी सहायता की। यही कारण है कि पांगी के लोग आज भी इन्हें अपना ही आदमी व हित-चिन्तक मानते हैं और यह भी सेवा निवृत्ति के बाद लगभग हर वर्ष पांगी-घाटी की यात्रा पर अवश्य ही जाते हैं। पांगी-घाटी के विकासात्मक कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा करवाने, सड़कों के निर्माण तथा बस सेवा को साचपास के रास्ते पहुंचाने, मन्दिरों के निर्माण के साथ-साथ अति दूर स्थित भटौरियों में गोम्पा बनवाने आदि-आदि के कार्य, जो भी इनके कार्यकाल में हुए हैं, समस्त पांगी वासी आज भी इनके योगदान की सराहना करते हैं। घाटी में शिक्षा की लौ को जगाने के लिए भी इनकी भूमिका विद्यालयी स्तर से लेकर महाविद्यालय और आई टी आई की स्थापना तक में महत्वपूर्ण रही है।बोर्ड सचिव के रूप में भी इन्होंने घाटी के विद्यालयों को कई शैक्षणिक सुविधाएं उपलब्ध कराने की कोशिश की, जिनके लिए वहां के निवासी आज भी आभार ज्ञापित करते हैं।

पांगी-घाटी में ही नौकरी के दौरान दो अति विशिष्ट महान हस्तियों को काल के मुंह में जाने से बचाने का सफल प्रयास भी इन्होंने किया। एक बार फिंडरू-फिंडपार के लिए बने चन्द्र भागा के पुल के उद्घाटन के समय तत्कालीन मुख्यमंत्री राजा वीरभद्र सिंह जी के साथ बागवानी मंत्री सत्यप्रकाश ठाकुर जी थे और प्रभात शर्मा जी उस समय उप मंडल अधिकारी (ना.) के रूप में प्रशासनिक उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए साथ थे। उद्घाटन के मध्य ही चन्द्र भागा की ढांक के नजदीक ही सत्यप्रकाश ठाकुर जी का पैर जरा-सा क्या फिसला कि वह लड़खड़ा कर गिरने को ही हुए कि प्रभात शर्मा जी ने एकदम कसकर पकड़ करके उन्हें नीचे गिरने से बचा लिया। यदि पलक झपकने की भी देर हो जाती तो कोई भी अनहोनी घटित हो सकती थी। आज भी सत्यप्रकाश ठाकुर उस दृश्य को स्मरण कर सिहर उठते हैं और प्रभात शर्मा का धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के सचिव पद से सेवानिवृत्ति के उपरांत इन्होंने अपने को पूर्ण रूप से यायावरी, साहित्य सेवा एवं प्रशासनिक सेवा - नियमों आदि का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए समर्पित कर दिया है। भू-व्यवस्था संबंधी विभिन्न समस्याओं का समाधान तो यह सुझाते ही हैं, एक कुशल स्रोत व्यक्ति के रूप में विभिन्न विभागों, विशेष रूप से राजस्व, शिक्षा एवं स्वास्थ्य आदि विभागों से जुड़े अधिकारियों को सेवा नियमों के साथ-साथ सूचना का अधिकार आदि पर विस्तार के साथ जानकारी व सुझाव प्रेषित करते हैं। साहित्य के प्रति लगाव को आगे बढ़ाते हुए जहां इनकी एक पुस्तक मनमोहक देवधरा पांगी प्रकाशित हो चुकी है, वहां कई शोधात्मक एवं लोक-सांस्कृतिक विषयक आलेख भी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। हिन्दी, पहाड़ी एवं संस्कृत कविता पर भी इनकी मजबूत पकड़ है और जहां यह कई मंचों पर इनकी सुन्दर प्रस्तुतियां भी दे चुके हैं।

मेला राम सहित कई हस्तियों को विशिष्ट कला सम्मान

राजगढ़ (प्रे. वि). लोक संस्कृति व लोक कलाओं के सरंक्षण, संवर्धन वह उन्हें बढ़ावा देने के लिए समर्पित केतन म्यूजिक अकैडमी ने अपने गरिमापूर्ण वार्षिक समारोह में हिमाचल प्रदेश के जाने-माने फिल्म निर्माता निर्देशक व लोक संस्ति के पोषक मेलाराम शर्मा सहित विभिन्न क्षेत्रों की कई विशिष्ट हस्तियों को प्रतिष्ठित कला सम्मान से नवाजा।ये सम्मान हिमाचल प्रदेश के मुख्य सचिव ड श्रीकांत बाल्दी ने शिमला में प्रदान किए। विशिष्ट कला सम्मान से नवाजी गई अन्य शख्सियतों में शास्त्रीय गायन की चर्चित हस्ती प्रो. सोमदत्त बट्टू, शास्त्रीय कथक नृत्य के लिए श्रीमती ईला पांडे, शास्त्रीय व लोक संगीत के लिए रामस्वरूप शांडिल, बांसुरी वादन के लिए लेखराम गंधर्व, विख्यात लेखक, समीक्षक, रंगकर्मी व विचारक श्रीनिवास जोशी, पंडित ज्वाला प्रसाद शर्मा, अच्छर सिंह परमार, नीरज शांडिल, बसंती देवी, दौलत राम तंवर, परसराम तोमर व संजय सूद शामिल है।

गौरतलब है कि सूचना एवं जनसंपर्क विभाग से बतौर डिप्टी डायरेक्टर सेवानृवित मेला राम शर्मा को पिछले 38 वर्षों के दौरान हिमाचल प्रदेश की गौरवपूर्ण संस्ति के संरक्षण व लोक कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। प्रदेश के सिरमौर जनपद की गौरवपूर्ण सांस्तिक परंपराओं पर आधारित उनके द्वारा बनाई गई बूढ़ी दिवाली डाक्यूमेंट्री फिल्म को मुंबई में आयोजित अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में स्पेशल जूरी अवार्ड से नवाजे जाने के साथ-साथ अमेरिका के डायवर्सिटी फिल्म फेस्टिवल में भी इस साल 15 अगस्त को दिखाया जा चुका है। इस फिल्म में सिरमौर जनपद के बूढ़ी दीवाली उत्सव के दौरान आयोजित किए जाने वाले पारंपरिक चोलटू नृत्य सहित स्वांग खेलटू रासा नृत्य ,मशाल जुलूस उत्सव के दौरान पारंपरिक खान-पान आदि परंपराओं को फिल्माया गया है और कला समीक्षकों ने इस डाक्यूमेंट्री फिल्म के खुलकर सराहना की है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि मेला राम शर्मा द्वारा तैयार की गई रेणुका डैम विस्थापितों पर डाक्यूमेंट्री फिल्म गत वर्ष शिमला के अंतरराष्ट्रीय फिल्मोत्सव में प्रदेश की सर्वश्रेष्ठ डाक्यूमेंट्री फिल्म का पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है।

हिलव्यु पब्लिक स्कूल माजरा ने मनाया दीवाली उत्सव

माजरा (प्रे.वि). दीपावली के शुभ अवसर पर स्कूल की उप प्रधानाचार्या श्रीमती मंजुला गुप्ता द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस मौके पर आठवी, नौंवी एवं दसवीं की छात्राओं द्वारा मेंहदी प्रतियोगिता में भाग लिया गया, एवं छात्रों द्वारा प्रदूषण मुक्त दीवाली का संदेश पोस्टर बनाकर दिया गया। इसी शुभ अवसर पर छात्राओं द्वारा रंगोली भी बनाई गई। कक्षा छठी व सातवीं के छात्र -छात्राओं द्वारा दीवाली के उपलक्ष के बधाई पत्र बनाए गए। कक्षा तीसरी, चौथी व पांचवी के बच्चों द्वारा दीया व मोमबत्ती को सजाया गया। कक्षा पहली व दूसरी के छात्र -छात्राओं द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता के अर्न्तगत दीया व मोमबत्ती बनाई गई।इस अवसर पर प्रधानाचार्या श्रीमती पूनम शर्मा द्वारा बच्चों को प्रदूषण मुक्त दीवाली मनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। भाईचारा व सामाजिक बुराईयों से दूर रहने का संदेश दिया गया। निर्देशिका श्रीमती पूनम गोयल द्वारा इस शुभ अवसर पर समस्त स्टाफ को दीवाली की बधाई दी।

मुद्रक, प्रकाशक और स्वामी अरविन्द गोयल द्वारा हरिओम मैनुफैक्चरर, कुंजा मतरालियों, पांवटा साहिब (हि.प्र.) से मुद्रित तथा एच-7 हाऊसिंग बोर्ड कोलोनी, नाहन, जिला सिरमौर (हि.प्र.) -173001 से प्रकाशित। सम्पादक : अरविन्द गोयल। फोन: 01704-318724 फैक्स : 01704-225724, पाँवटा कार्यालय : वाई प्वाईंट, मेन बाजार, पाँवटा साहिब। समस्त वाद-विवाद का न्यायिक क्षेत्र पांवटा साहिब, जिला सिरमौर होगा। PR No. : L/SLN/98/2019-21; R.N.I.No 66124/97 ; D.A.V.P No .131488